दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक



7

3 गोरखपुर विवविद्यालय को मिले नए कुलपति, प्रो. केपी सिंह संभालेंगे कमान

5 टिकट किसे मिले वो अलग बात

8 धोनी इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर नहीं खेलेंगे

UPHIN/2023/90814 | वर्ष: 04, अंक: 11 | पृष्ठ संख्या: 8 | मूल्य: 1.00 रू. | सोमवार 07 सितम्बर, 2026

सीएम योगी ने गोरखनाथ मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया









गोरखपुर में सीएम योगी ने 81 शिक्षकों को कर रहे सम्मानित

सेवानिवृत्ति आयु में विस्तार और मुफ्त यात्रा जैसी सुविधाओं की दी सौगात



संवाददाता, गोरखपुर। शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर गोरखपुर के योगिराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में आयोजित भव्य समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के 81 उत्कृष्ट शिक्षकों को 'राज्य अध्यापक पुरस्कार–2025' एवं 'मुख्यमंत्री अध्यापक पुरस्कार–2025' से सम्मानित कर रहे हैं। समारोह में बेसिक शिक्षा विभाग के 61 और माध्यमिक शिक्षा विभाग के 20 शिक्षकों को सम्मानित किया जा रहा है, जिनमें 33 महिला शिक्षिकाएं भी शामिल हैं।

पुरस्कार के तहत प्रत्येक शिक्षक को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न और ₹25,000 की सम्मान राशि प्रदान की गई। इसके साथ ही राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षकों की सेवानिवृत्ति आयु सीमा में 2 वर्ष का विस्तार दिया गया है और उन्हें यूपी राज्य सड़क परिवहन निगम की बसों में प्रतिवर्ष 4,000 किलोमीटर तक निःशुल्क यात्रा की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। समारोह के दौरान माध्यमिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गुलाब देवी और बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह भी मौजूद रहे।

इन्हें किया जा रहा सम्मानित

- रेनू तोमर, प्रधानाचार्य, जवाहर लाल मेमोरियल गर्ल्स इंटर कालेज, गाजियाबाद
- महेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, अध्यापक, एलपीके इंटर कालेज, बसडीला, सरदार नगर, गोरखपुर
- राजपाल, अध्यापक, दरबारी लाल शर्मा इंटरखलेज, रिठौरा, बरेली
- डा.योगेंद्र प्रताप सिंह, प्रधानाचार्य, पं.दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज, लखीमपुर खीरी
- कल्पना सिंह, प्रधानाचार्य, सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कालेज, झांसी
- अमर सिंह, प्रधानाध्यापक, उच्च प्राथमिक विद्यालय, बहरावद, विकासखंड–अतरौली, अलीगढ़
- शुचि त्यागी, सहायक अध्यापिका, कम्पोजिट विद्यालय, पिपलैड़ा, विकासखंड–धौलाना, हापुड़
- धनंजय प्रताप सिंह, रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय, सलेमपुर लाला, विकासखंड–कासगंज, कासगंज
- सय्यदा, प्रधानाध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय, पिपरिया अगरू, विकासखंड–मरौरी, पीलीभीत
- बृजकिशोर, प्रधानाध्यापक, कम्पोजिट विद्यालय, रसूलपुर, विकासखंड–गुन्नौर, संभल

सीएम योगी का विपक्ष पर हमला

बोले– जिन्हें अयोध्या का विकास अच्छा नहीं लग रहा, वे कर रहे बदनाम

सनातन विरोधियों को कंस जैसा अंजाम भुगतने की चेतावनी

अयोध्या के विकास विरोधी उसे बदनाम कर रहे हैं: योगी



संवाददाता, मथुरा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या में विकास विरोधियों को अच्छा नहीं लगता। इसलिए वह अयोध्या को बदनाम कर रहे हैं। वह अयोध्या और काशी विश्वनाथ की तरह मथुरा–वृंदावन में भी भव्य और दिव्य परिसर बनाना चाहते हैं। मथुरा–वृंदावन के दो दिवसीय दौरे पर आए सीएम रात्रि विश्राम के बाद सुबह 9.55 बजे श्रीकृष्ण जन्मस्थान पहुंचे। सीएम रहते हुए उनका यह 20वीं बार जन्मस्थान का दौरा है। योगी ने गर्भगृह में लाला के दर्शन किए। केशवदेव और योगमाया मंदिर में दर्शन किए। जन्मस्थान पर गोपूजन के बाद श्रद्धालुओं को संबोधित किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मथुरा में कहा कि अयोध्या के विकास विरोधी उसे बदनाम कर रहे हैं



सनातन को मिटाने की कोशिश करने वाले मिट्टी में मिल गए

श्रीकृष्ण जन्मभूमि से सनातन की शक्ति को याद दिलाते हुए सीएम ने कहा कि हमारे सनातन को मिटाने की कोशिश करने वाले मिट्टी में मिल गए। बाबर और औरंगजेब जैसे हमलावर आए, अब ढूंढे नहीं मिलेंगे। सपा की ओर इशारा करते हुए सवाल उठाया कि जिनकी आस्था बाबर और औरंगजेब में है, वह आपका क्या सम्मान करेंगे? वह समाज में जहर घोलने का काम फिर से कर रहे हैं। समाज में जहर घोलना उनकी आदत ही है, जिससे राष्ट्रविरोधी तत्वों के हौसले बढ़ सकें। वह आपकी सुरक्षा में सेंध लगा सकें।

सीएम बोले–समाज में जहर घोलने वालों का कंस जैसा विनाश होगा

सीएम ने कहा कि डबल इंजन सरकार इनके मंसूबों को पूरा नहीं होने देगी। हमें केवल देश और समाज की चिंता करनी है, बाकी सब खुद कन्हैया करेंगे। योगी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने 5200 वर्ष पहले जो उद्घोष किए थे, वह आज भी प्रासंगिक हैं। सज्जन शक्ति जहां होगी, उसका संरक्षण होगा। राष्ट्र व समाज विरोधियों की तो कंस जैसी दुर्गति तय है।

भाजपा की क्षेत्रीय कार्यसमिति की घोषणा गोरखपुर को एक बार फिर तवज्जो

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर को भाजपा संगठन की नई क्षेत्रीय टीम में एक बार फिर अहम तवज्जो मिली है। 10 उपाध्यक्ष, चार महामंत्री और 10 मंत्रियों की नियुक्ति में पुराने अनुभवी चेहरों के साथ युवाओं को भी जिम्मेदारी दी गई है। नई टीम में गोरखपुर के कई नेताओं को महत्वपूर्ण पद सौंपे गए हैं। उत्तर प्रदेश में भाजपा में क्षेत्रीय संगठन में 10 उपाध्यक्ष, चार महामंत्री और 10 मंत्रियों की नियुक्ति की गई है। नई टीम में पुराने चेहरों के अनुभव के साथ युवाओं को भी जिम्मेदारी दी गई है। खास बात यह है कि गोरखपुर को एक बार फिर संगठन में तवज्जो मिली है। क्षेत्रीय उपाध्यक्ष के रूप में राधे श्याम पाण्डेय, संजीव राय, हरिचरण कुशवाहा, रणजीत राय, अरजीत सिंह, युधिष्ठिर सिंह, राजेश गुप्ता, कृष्णगोपाल जायसवाल, जयप्रकाश शाही और राजेन्द्र प्रसाद पांडेय को जिम्मेदारी दी गई है। वहीं, डॉ. सत्येन्द्र सिन्हा, डॉ. बच्चा पाण्डेय नवीन, भास्कर निषाद और राहुल श्रीवास्तव को क्षेत्रीय महामंत्री नियुक्त किया गया है। क्षेत्रीय मंत्री के रूप में रणविजय चौहान, राजेश पाल चौधरी, हरिकेश गुप्ता, कन्हैया पासवान, डॉ. बब्बू प्रसाद बेलदार, वैभव पाण्डेय, सिद्धार्थ शंकर पाण्डेय, ध्रुव श्रीवास्तव, सुनीता अग्रहरि और बृजेश राम त्रिपाठी को जिम्मेदारी मिली है।

एम्स में लीवर ट्रांसप्लांट के नाम पर ठगी

स्वास्थ्य विभाग से जुड़े शख्स पर 4.14 लाख की धोखाधड़ी का आरोप

देवरिया,संवाददाता। डेढ़ साल की बीमार मान्या चौहान का एम्स दिल्ली में लीवर ट्रांसप्लांट कराने का झांसा देकर लखनऊ के स्वास्थ्य विभाग से जुड़े हर्षित पाठक ने उसके परिजन से चार लाख 14 हजार 500 रुपये ठग लिए। आरोप है कि उसने एम्स में भर्ती कराने के नाम पर फर्जी बिल भेजकर करीब तीन महीने तक परिजन को गुमराह किया। बच्ची को लेकर परिजन जब एम्स दिल्ली पहुंचे तो बिल फर्जी होने की जानकारी हुई। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सम्पादकीय

स्कूली कक्षाओं को चाहिए योग्य शिक्षक

केवल विद्यार्थी के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षक के रूप में भी, ताकि वे भारत को जान सकें और समय आने पर उसका नेतृत्व कर सकें

युवा स्नातक जमीनी हकीकत समझने के लिए स्कूलों में पढ़ाते हैं। शिक्षण केवल पढ़ाई नहीं, बल्कि नेतृत्व और मूल्य सिखाना है। भारत के विकास हेतु योग्य शिक्षकों की अनिवार्य आवश्यकता है।

प्रमथ राज सिन्हा। कुछ महीने पहले मुझे ऐसे युवाओं के साथ समय बिताने का अवसर मिला, जो दो वर्षों से देश के अलग–अलग भागों में कम संसाधनों वाले स्कूलों में शिक्षक की भूमिका निभा रहे हैं। ये युवा इंजीनियरिंग, अर्थशास्त्र, वकालत, पत्रकारिता और साहित्य के ग्रेजुएट्स हैं और इनमें से किसी का भी लक्ष्य शिक्षक बनना नहीं था। उनका बस एक उद्देश्य था–स्कूल में पढ़ाकर उस भारत से परिचित होना, जो उनके अनुभवों से अलग है। इन ग्रेजुएट्स को साफ दिखाई दे रहा था कि समाज और देश को किन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है और कहां बदलाव लाना जरूरी है। आखिर इन युवाओं में ऐसा क्या अलग था? मेरा निष्कर्ष है कि पढ़ाना ही नेतृत्व करना है। स्कूल में पढ़ाने का मतलब है अपना सर्वश्रेष्ठ देना। शिक्षक की जिम्मेदारी सिर्फ छात्रों की पढ़ाई तक ही सीमित नहीं रहती। वे उन्हें समय की पाबंदी, सहानुभूति और ईमानदारी जैसे मूल्य सिखाते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थी नियम से स्कूल आएं, क्लास की गतिविधियों में हिस्सा लें और विश्वास रखें कि उनके भीतर भी क्षमता है। विद्यार्थी जितना शिक्षकों के शब्दों से सीखते हैं, उतना ही उनके आचरण से। जब शिक्षक विद्यार्थियों को एकाग्रता के साथ बेहतर करने और अच्छा भविष्य रचने की सीख देते हैं, तो उसका प्रभाव आगे चलकर समाज और देश पर पड़ता है। जब शिक्षक किसी ऐसे स्कूल में पढ़ाते हैं, जहां संसाधनों की कमी हो तब ये बातें और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं, क्योंकि यही वह जगह है, जहां भारत की चुनौतियां अपने सबसे स्पष्ट रूप में दिखाई देती हैं।

किसी कम आय वाले इलाके की आठवीं कक्षा की कल्पना कीजिए। शिक्षक को पहले ही हफ्ते पता चल जाता है कि कई बच्चों का पढ़ने का स्तर दूसरी कक्षा का है। स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित, कुपोषण, आर्थिक तंगी से परेशान ये बच्चे क्या ध्यान लगाकर पढ़ पाएंगे? जात–पात, लिंग भेद, पंथ–संप्रदाय, सभी का असर इस पर पड़ता है कि कौन कक्षा में बोलेगा, कौन घर से काम करके ला पाएगा और कौन भविष्य के सपने देखने का साहस करेगा। सेकेंडरी स्कूल तक पहुंचते–पहुंचते बच्चों के सामने मोबाइल स्क्रीन और डिजिटल मीडिया की दुनिया खुल जाती है, जहां अक्सर बड़ों से उन्हें पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। बच्चों के विकास के इन महत्वपूर्ण दिनों में एक शिक्षक की जिम्मेदारी केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि और अधिक जटिल और बहुआयामी बन जाती है।

कल्पना कीजिए कि एक युवा शिक्षक पूरी तैयारी के साथ कक्षा में पहुंचता है। उसे चंद ही मिनटों में पता चल जाता है कि कई विद्यार्थी पाठ्यक्रम की किताब तक ठीक से पढ़ नहीं पा रहे हैं। तब वह किताब को परे रखकर, परिस्थिति के अनुसार अपना तरीका बदलता है। वह पढ़ाने के सरल तरीके ढूंढ़ता है, कहानियां सुनाता है और उन कहानियों को रोजमर्रा के जीवन से जोड़ता है। पढ़ाने के तरीके में इस तरह के बदलाव करना एक आम बात है। ऐसे अनुभव इस विश्वास को जन्म देते हैं कि गहरी चुनौतियों के बावजूद भारत में अभूतपूर्व सामाजिक सुधार और विकास की संभावना है। जब शिक्षक देखते हैं कि जिस बच्चे से जून में कोई उम्मीद नहीं थी, वह अक्टूबर आते–आते पूरा पाठ सस्वर पढ़ रहा है, तब वे यह बात दिमाग से निकाल देते हैं कि देश कभी बदल नहीं सकता।

शिक्षक देख लेते हैं कि जो संभव है, वह साकार भी हो सकता है। नगर निगम स्कूल में दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ा रहे एक स्नातक ने दो ही वर्षों में विद्यार्थियों में तीन सालों की शैक्षणिक प्रगति दिखाई, स्कूल व्यवस्था को बदला और अपने प्रयास को सफल बनाने के लिए कारपोरेट साझेदारी से समर्थन जुटाया। आज वह एक विश्वस्तरीय कंसल्टिंग फर्म में लीडर हैं। टीच फार इंडिया, भूमि, गांधी फेलोशिप और एजुकेट गर्ल्स जैसी पहलों ने ऐसे युवा स्नातकों का समूह तैयार किया, जो देश की जमीनी सच्चाइयों से परिचित हैं। ये स्नातक अब टेक्नोलाजी, कंसल्टिंग और सामाजिक उद्यम के क्षेत्रों में संस्था निर्माता, विचारक एवं उद्यमियों के रूप में काम कर रहे हैं।

देश में स्नातकों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इनमें से कई ऐसे हैं, जो देश के लिए कुछ करने के लिए तत्पर हैं। सवाल यह है कि क्या उन्हें देश की जमीनी सच्चाई की समझ है? जिस तरह कई देशों में युवाओं की फौज में भर्ती अनिवार्य है, उसी तरह शायद भारत में हर युवा को शिक्षण में अनिवार्य भर्ती शुरू करनी चाहिए। जिसकी इच्छा पढ़ाने की न हो, वह किसी और रूप में स्कूल में योगदान दे। नौकरीपेशा लोग भी किसी विद्यालय को हर हफ्ते अपने कुछ घंटे दें। इससे आत्मविश्वास के साथ देश की समस्याओं को सुलझाने वाला युवा वर्ग तैयार होगा। भारत ही एक ऐसा देश है, जहां इतनी विविधता, इतने सारे काबिल लोग और इतने जरूरतमंद स्कूली बच्चों का संयोजन है। समस्याओं के उपाय खोजने के लिए हमें किसी और देश की ओर देखने की आवश्यकता नहीं है। स्थिति, सामर्थ्य और आशा, सब हमारे पास हैं। हमें अपनी स्कूली कक्षाओं में और काबिल लोग चाहिए। केवल विद्यार्थी के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षक के रूप में भी, ताकि वे भारत को जान सकें और समय आने पर उसका नेतृत्व कर सकें।

प्रमाणित होती अर्थव्यवस्था की मजबूती

विकसित देशों में भी डबल डिफ्लेशन पद्धति अपनाने पर इस तरह के परिणाम सामने आए हैं। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कच्चे माल की कीमतों में बढ़ोतरी तैयार उत्पादों की कीमतों की तुलना में अधिक रही। एस. महेंद्र देव और सौरभ गर्ग। वित्त वर्ष 2025–26 के लिए 31 अगस्त को पहली तिमाही के वृद्धि दर के आंकड़े सामने आने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति को लेकर काफी चर्चा हो रही है। अकादमिक जगत के एक वर्ग ने इन आंकड़ों पर सवाल उठाते हुए कहा है कि राष्ट्रीय आय और जीडीपी की गणना की पद्धति में कुछ ऐसी समस्याएं हैं, जिनकी वजह से इन आंकड़ों की विश्वसनीयता पर संदेह होता है। इसकी पड़ताल आवश्यक है।

वित्त वर्ष 2026–27 की पहली तिमाही में दर्ज 7.8 प्रतिशत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि के पीछे कई महत्वपूर्ण और निरंतर उपलब्ध आर्थिक संकेतकों का मजबूत आधार है। ये संकेतक अर्थव्यवस्था के विस्तार की मजबूती को प्रमाणित करते हैं। जैसे वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री में 18.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह माल ढुलाई और कारोबारी मांग में मजबूती का संकेत देती है। कंपनियां भविष्य में मांग बढ़ने की उम्मीद में वाहनों के बेड़े का विस्तार कर रही हैं। निवेश के मोर्चे पर भी काफी मजबूती दिखाई दे रही है। पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन में 15.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि मशीनरी और उपकरणों के आयात में 51.5 प्रतिशत की तेज बढ़ोतरी हुई।

सीमेंट उत्पादन, तैयार स्टील की खपत और बुनियादी ढांचे तथा निर्माण से जुड़ी वस्तुओं के उत्पादन में भी मजबूत वृद्धि हुई। ई–वे बिल बनने की संख्या में भी दोहरे अंकों में वृद्धि जारी रही। जीएसटी की दरों में बड़े स्तर पर बदलाव और युक्तिसंगत बनाने के बाद सकल जीएसटी संग्रह में 8.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इन सभी संकेतकों को एक साथ देखने से पता चलता है कि अर्थव्यवस्था की वास्तविक गतिविधियां मजबूत बनी हुई हैं और आर्थिक वृद्धि का आधार काफी व्यापक है। पहली तिमाही में वाहनों की जोरदार बिक्री से संकेत मिलता है कि अपनी पसंद और आवश्यकता पर खर्च करने को लेकर लोगों की क्षमता बढ़ी है, जिसने मांग को मजबूती प्रदान की है। कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र, तीनों में बैंक ऋण की व्यापक वृद्धि हुई है। मजबूत निवेश, स्थिर खपत, माल ढुलाई में तेजी और बैंक ऋण के विस्तार का एक साथ होना इसका संकेत है कि अर्थव्यवस्था का यह विस्तार टिकाऊ है।

वृद्धि को लेकर संदेह का एक पहलू मौजूदा कीमतों और स्थिर कीमतों पर जीडीपी के बीच कीमतों में किए जाने वाले समायोजन यानी जीडीपी डिफ्लेशन को लेकर है। यह चिंता तब भी बनी हुई है, जबकि आधार वर्ष में बदलाव के दौरान गणना की पद्धति में काफी सुधार किए गए हैं। पहली तिमाही के नतीजे आने के बाद जीडीपी डिफ्लेटर को लेकर जो सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी सवाल उठाया गया है, वह भी इसी मुद्दे से जुड़ा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनाई जाने वाली बेहतर पद्धतियों के अनुरूप संशोधित राष्ट्रीय आय के आंकड़ों में कीमतों के समायोजन के लिए अब थोक मूल्य सूचकांक यानी डब्ल्यूपीआइ की जगह नए उत्पादक मूल्य सूचकांक यानी पीपीआइ का उपयोग किया गया है। हालांकि, डिफ्लेशन की पद्धति और कीमतों से जुड़े आंकड़ों के स्रोत दोनों में एक साथ बदलाव किए जाने के कारण हाल में जीडीपी डिफ्लेटर में आए बदलावों को समझना कुछ मुश्किल हो गया है। पहली तिमाही के आंकड़े जारी होने के बाद हुई चर्चाओं में भी यह बात सामने आई है।

हमने विनिर्माण क्षेत्र में 'डबल डिफ्लेशन' पद्धति अपनाई है। इसमें उत्पादन और उत्पादन में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं (मध्यवर्ती खपत) की कीमतों में बदलाव को अलग–अलग समायोजित किया जाता है। इसके बाद दोनों के वास्तविक मूल्यों के अंतर से वास्तविक सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) निकाला जाता है। राष्ट्रीय आय की गणना में यह दुनिया भर में अपनाई जाने वाली सबसे बेहतर पद्धति मानी जाती है। जब उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल की कीमतें तैयार उत्पादों की कीमतों से ज्यादा तेजी से बढ़ती हैं, तो मौजूदा कीमतों पर जीवीए की वृद्धि वास्तविक जीवीए की वृद्धि से कम हो सकती है। जब उत्पादन और कच्चे माल, दोनों की कीमतें बढ़ रही हों, तब भी जीवीए का निहित डिफ्लेटर नकारात्मक हो सकता है।

विकसित देशों में भी डबल डिफ्लेशन पद्धति अपनाने पर इस तरह के परिणाम सामने आए हैं। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कच्चे माल की कीमतों में बढ़ोतरी तैयार उत्पादों की कीमतों की तुलना में अधिक रही। इससे जीवीए डिफ्लेटर कम हुआ। इसके अलावा, कुछ सेवा क्षेत्रों में कीमतों में बहुत कम वृद्धि होने के कारण जीवीए डिफ्लेटर और सामान्य सीपीआइ और डब्ल्यूपीआइ के बीच अंतर और बढ़ गया। स्थिर कीमतों पर जीवीए का अनुमान सामान्य या समग्र मूल्य सूचकांकों के आधार पर नहीं लगाया जाता।

इसके लिए अलग–अलग प्रकार के उत्पादन और उसमें इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं के लिए 300 से अधिक उत्पादक मूल्य और अन्य मूल्य सूचकांकों का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए अलग–अलग और व्यापक स्तर के कुछ आंकड़ों को सामने रखकर इन जीवीए अनुमानों पर सवाल उठाना उचित नहीं। इससे एक ऐसी सांख्यिकीय व्यवस्था को लेकर जनता में गलत धारणा बन सकती है, जिसे अधिक पारदर्शी और बेहतर बनाने के लिए लगातार सुधार किया गया है।

एक अध्ययन में भारत की राष्ट्रीय आय की गणना की पद्धति पर अनुचित तरीके से सवाल उठाए गए हैं। इसमें यह मान लिया गया है कि जीडीपी वृद्धि को कथित रूप से जरूरत से ज्यादा दिखाए जाने के कारण भारत के वास्तविक प्रदर्शन और इस काल्पनिक तुलना वाले देश के प्रदर्शन के बीच जो अंतर निकाला गया है, वह वास्तव में षनिचली सीमाष है, लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया कि जीडीपी की गणना की पद्धति में आखिर गलती कहां है। आर्थिक आकलन की किसी प्रणाली की आलोचना स्वागतयोग्य है, क्योंकि इससे सुधार की दिशा स्पष्ट हो सकती है, लेकिन भ्रामक टिप्पणियों और सुविधाजनक निष्कर्षों से यह संभव नहीं होता। विशेष तौर से तब जब अर्थव्यवस्था के लगभग सभी प्रमुख क्षेत्र तेजी का संकेत कर रहे हों।

तकनीक की लत के शिकार होते बच्चे

इन दिनों दुनिया भर में बच्चों के बढ़ते स्क्रीन टाइम पर चिंता जताई जा रही है। आस्ट्रेलिया ने सबसे पहले 16 साल तक के बच्चों पर स्कूल में मोबाइल ले जाने और टिकटाक, इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब आदि के इस्तेमाल पर रोक लगाई। ब्राजील, इंडोनेशिया, मलेशिया, चीन आदि देशों ने भी थोड़े–बहुत फेरबदल के साथ ऐसा किया है। फ्रांस, ब्रिटेन, स्पेन, कनाडा, पुर्तगाल, इटली, दक्षिण कोरिया आदि देश भी ऐसा कर रहे हैं या तैयारी में हैं। इस मामले में भारत में हिमाचल सरकार ने स्कूलों में मोबाइल ले जाने पर पाबंदी लगा दी है। कर्नाटक की सरकार 16 साल तक के बच्चों के लिए डिजिटल मीडिया पर बैन और स्मार्टफोन के इस्तेमाल पर लगाम कसेगी। आश्चर्यजनक रूप से अमेरिका में ऐसा नहीं किया गया है। इसका कारण शायद यह है कि तमाम बड़ी टेक कंपनियां अमेरिकी ही हैं। इन्होंने ही ऐसे एल्गोरिदम विकसित किए हैं, जो बच्चों को फोन और डिजिटल मीडिया की लत लगा देते हैं। इससे इन्हें भारी मुनाफा होता है। पूंजी के मालिकों को वही भगवान लगती है, दुनिया के बच्चों का क्या होता है, यह दुनिया जाने।

टेक कंपनियों के मालिक यह जानते हैं कि बच्चों पर मोबाइल स्क्रीन और उन पर देखे जाने वाले तमाम कार्यक्रमों का क्या असर पड़ता है। इसलिए वे अपने बच्चों को मोबाइल से दूर रखते हैं। है न कमाल। एक तरफ यह सिखाया गया है कि तकनीक ही असली भगवान है। अगर बच्चों ने जल्द से जल्द इसे नहीं सीखा तो सफलता और जीवन की रेस में पिछड़ जाओगे और दूसरी तरफ उन्हें इसी तकनीक का लती बनाया जा रहा है। पिछले दिनों एक बड़ी टेक कंपनी के मालिक ने अपनी दूसरी बेटी के जन्म पर खुशी प्रकट करते हुए एक पत्र में लिखा कि बच्ची बाहर खेलेगी। फूलों की खुशबू को महसूस करेगी। पत्तों को देखेगी। ऐसी ही एक और बड़ी टेक कंपनी के कर्ता–धर्ता अपने बच्चे को मोबाइल के पास भी नहीं फटकने देते। एक और बड़ी टेक कंपनी के सर्वेसर्वा ने 11 साल की उम्र तक अपने बेटे को फोन से दूर रखा। इसी तरह कंप्यूटर की दुनिया में बहुत नाम कमाने वाली कंपनी के बड़े भारतीय अफसर ने अपने बच्चों को 14 साल की उम्र तक फोन का इस्तेमाल नहीं करने दिया। एक और टेक कंपनी के प्रमुख अपने बच्चों के स्क्रीन टाइम को लेकर समय के बहुत पाबंद हैं। एआइ से जुड़े एक दिग्गज अपने बच्चों के जीवन में एआइ की घुसपैठ जल्दी नहीं कराना चाहते। साफ है कि ये लोग चाहते हैं कि इनके बच्चे मिट्टी की सुगंध महसूस करें। प्रकृति को जीवन का हिस्सा बनाएं। हमेशा भगदड़ में रहने के मुकाबले अकेले रहना भी सीखें। आज अमेरिका समेत पश्चिमी देशों में ऐसे बहुत से पार्क हैं, जहां बच्चों को विशेष रूप से मिट्टी में खेलने के लिए ले जाया जाता है। कहते हैं कि इससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसकी तगड़ी फीस भी देनी पड़ती है। यही नहीं वहां बच्चे ऐसे स्कूलों में भी पढ़ते हैं, जहां मोबाइल फोन के इस्तेमाल पर पाबंदी है। एक समय अपने यहां भी मिट्टी में खेलने को जीवन का आवश्यक अंग माना जाता था, लेकिन बैक्टीरिया और रोगों का डर दिखाकर बच्चों से दूर कर दिया गया। सोचने की बात यह है कि अगर आप धनकुबेर हैं, तो आपके लिए अलग नियम हैं और दूसरों के लिए अलग। आपके बच्चे मोबाइल,कंप्यूटर, टीवी, डिजिटल मीडिया से दूर रहें और दूसरे बच्चों को यह सिखाया जाए कि यदि जीवन में ये चीजें नहीं, तो कुछ नहीं। आप हर रेस में पिछड़ जाएंगे। यह सब पढ़ते हुए आमजन को मूर्ख बनाने के कितने ही तरीके याद आ रहे थे। बहुत पहले बड़ी–बड़ी अभिनेत्रियां एक खास ब्रांड के साबुन का विज्ञापन करती थीं। इस साबुन का विज्ञापन करने वाली किसी भी हीरोइन ने शायद ही कभी इसका इस्तेमाल किया हो। चाकलेट का विज्ञापन बहुत से अभिनेता–अभिनेत्रियां करते हैं। कई साल पहले एक अभिनेत्री ने कहा था कि उसके बच्चे ने आज तक चाकलेट नहीं खाई। यदि वह कोई अच्छा काम करता है, तो उसे पुरस्कार के रूप में गुड़ दिया जाता है। यह मार्केटिंग का ही असर है कि लोग बच्चों को तमाम जंक फूड खिलाने में शान समझते हैं।

गोरखनाथ मंदिर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पारंपरिक हर्षोल्लास के साथ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व मनाया

गर्भगृह में विधि–विधान से पूजा–अर्चना कर लड्डू गोपाल को झुलाया। बच्चों की राधा–कृष्ण सज्जा प्रतियोगिता में स्नेह व उपहार दिए

गोरखपुर,संवाददाता। भक्ति, प्रेम व धर्म के शाश्वत आलोक, गोपाल, जगतपाल, पूर्ण परब्रह्म, भगवान श्रीकृष्ण के प्राकट्योत्सव का पवित्र पर्व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, शिवावतार महायोगी गोरखनाथ की साधनास्थली गोरखनाथ मंदिर में पारंपरिक श्रद्धा, भव्यता एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। गोरक्षपीठ के इस पारंपरिक कार्यक्रम का नेतृत्व करने के लिए गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार रात लखनऊ से गोरखपुर पहुंचे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार सुबह से मध्य रात्रि तक, मथुरा से लेकर लखनऊ और गोरखपुर तक, समस्त योगियों के परमेश्वर माने जाने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण की साधना में रमे रहे। सुबह उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा स्थित जन्मभूमि मंदिर में कान्हा की विधि विधान से आराधना कर प्रदेशवासियों के सुखमय जीवन की प्रार्थना की। शाम को वह लखनऊ पुलिस लाइन में आयोजित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह में सम्मिलित हुए और फिर रात में गोरखनाथ मंदिर पहुंचकर उन्होंने पारंपरिक श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह में प्रभु के प्राकट्य अनुष्ठान को पूर्ण कराया।



गोरखनाथ मंदिर पहुंचने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सबसे पहले शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ का दर्शन पूजन किया। इसके बाद उन्होंने अपने गुरुदेव ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की समाधि पर मत्था टेक पुष्पार्चन किया, उनका आशीर्वाद लिया। गोरखनाथ मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के पावन उपलक्ष्य में महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सभागार में भजन संध्या का आयोजन किया गया था। मुख्यमंत्री यहां पहुंचे और सुमधुर भजनों का आनंद उठाते हुए राधा–कृष्ण बने बच्चों को दुलारकर उन्हें उपहार देते रहे।

गोरक्षपीठाधीश्वर ने मध्य रात्रि गोरखनाथ मंदिर के गर्भगृह में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर विधि विधान से विशिष्ट पूजा अर्चना की। रात 12 बजे भगवान श्रीकृष्ण के प्राकट्य के बाद श्नंद घर आनंद भयो, जय कन्हैयालाल कीश और 'श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेव' की मंगल धुन, सोहर गीत और घंट–घड़ियाल की ध्वनि के बीच गोरक्षपीठाधीश्वर उन्हें गोद में लेकर गर्भगृह से बाहर आए। सीएम योगी ने, प्रभु श्रीहरि के बाल स्वरूप 'लड्डू गोपाल' को फूलों से सजे पालने में बैठाकर श्रद्धाभाव से उन्हें झुलाया और आरती उतारी। प्रभु श्रीकृष्ण का प्राकट्य अनुष्ठान पूर्ण होने के उपरांत मंदिर की तरफ से श्रद्धालुओं को फलाहार और प्रसाद वितरित किया गया।

गोरखनाथ मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव परंपरागत रूप से धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर मंदिर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में भजन संध्या कार्यक्रम सुपरिचित लोक गायक डॉ. राकेश श्रीवास्तव के संयोजन में शाम से ही जारी था। दूसरी तरफ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का मुख्य धार्मिक अनुष्ठान मंदिर के गर्भगृह में रात करीब साढ़े ग्यारह बजे से प्रारंभ हुआ और ठीक मध्य रात्रि भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोपरांत मंगल गीत व प्रसाद वितरण के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रदेश सरकार के बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह, महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, विधायक फतेह बहादुर सिंह, कई साधु–संत और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। मध्य रात्रि तक मंदिर परिसर श्रद्धालुओं से खचाखच भरा रहा।

राधा–कृष्ण बने बच्चों को मिला सीएम योगी का स्नेह व उपहार

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महंत दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में भजन कीर्तन के मध्य श्रीकृष्ण रूप सज्जा प्रतियोगिता में राधा व कृष्ण बने बच्चों को खूब स्नेह दिया। उनसे खूब हंसी ठिठोली भी की। उन्हें खिलौने व चॉकलेट उपहार में दिए। इस दौरान कई मासूमों को अपनी गोद में लेकर वह काफी देर तक खिलाते रहे, प्यार–दुलार करते रहे। कुछ बच्चों ने सीएम योगी को दोहे और श्लोक सुनाए तो कुछ ने उनके साथ सेल्फी ली। मुख्यमंत्री सभी बच्चों का अनुरोध पूरा करते रहे।

बालरूप सज्जा नयनाभिराम

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव पर गोरखनाथ मंदिर के ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन सभागार में आयोजित श्रीकृष्ण बालरूप सज्जा प्रतियोगिता में सजधज कर आए बच्चों ने लोगों का मन मोह लिया। दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में हुई बाल रूप सज्जा प्रतियोगिता में कोई श्रीकृष्ण के रूप में था तो कोई राधा। इन बच्चों के वेश और रूप से सभागार एकबारगी गोकुल का भान करा रहा था। दो वर्गों में हुई इस प्रतियोगिता में शामिल सभी बच्चे कार्यक्रम का आकर्षण बढ़ा रहे थे। बाल रूप सज्जा प्रतियोगिता के कान्हा वर्ग में प्रथम पुरस्कार शर्विल पांडेय को, द्वितीय पुरस्कार सौम्या प्रजापति और तृतीय पुरस्कार हिमांशी श्रीवास्तव को दिया गया। गोपाल वर्ग में प्रथम पुरस्कार सार्थक, द्वितीय राजवीर और तृतीय पुरस्कार रूद्र को मिला। श्रीकृष्ण रूप सज्जा में विजेताओं को मुख्यमंत्री ने प्रशस्ति पत्र और उपहार देकर पुरस्कृत किया। निर्णायक की भूमिका सारिका राय, मनीषा सिंह और हृदया त्रिपाठी ने निभाई जबकि संचालन शिवेंद्र पांडेय ने किया।



भजनों में गूंजा जय कान्हा–श्याम

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में, डॉ. राकेश श्रीवास्तव के संयोजन में आयोजित भजन संध्या में कान्हा–श्याम की आराधना की गूंज रही। शुभारंभ पुनीत श्रीवास्तव ने एक सुमधुर भक्ति गीत से किया। इसके पश्चात हृदया त्रिपाठी व अनीता सिंह ने सोहर और लक्ष्मी गुप्ता ने बधाई गीत की कर्णप्रिय प्रस्तुति दी। गायक उमेश मिश्रा और एकता शुक्ला ने कृष्ण भजन सुनाकर सबको भाव विभोर कर दिया। डॉ. राकेश श्रीवास्तव ने पारंपरिक बधाई गीत एवं सोहर के गायन से वातावरण को उल्लासमय बना दिया। वाद्य यंत्रों पर श्यामसुंदर लाल श्रीवास्तव हंसलोना, दीपक, आभास पाठक एवं सुधाकर सिन्हा ने संगत की।

गर्भगृह में हनुमत संगीत आश्रम ने सजाई भजन संध्या

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के पावन अवसर पर गोरखनाथ मंदिर के गर्भगृह में हनुमत संगीत आश्रम एवं सेवा संस्थान की तरफ से रात आठ बजे से बारह बजे तक भजनों की प्रस्तुति की गई। जन्मोत्सव से पूर्व, गर्भगृह में भजनों का श्रवण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी किया। कार्यक्रम की शुरुआत गायक और संगीतकार अभिषेक पांडेय बिट्टू के भजनों से हुई। तत्पश्चात सिद्धि सिंह, निशांत शुक्ला, श्रेयांश तेजस्वी, ओम सिंह, हृदयांश श्रीवास्तव, अपूर्व नमन, आकांक्षा त्रिपाठी, प्रीति अग्रहरि और अलका जायसवाल ने अपने भजनों की प्रस्तुति से लोगों को खूब झुमाया। कार्यक्रम का संयोजन धर्मेंद्र कुमार श्रीवास्तव एवं संगीत निर्देशन अभिषेक पांडेय बिट्टू का था। वाद्य यंत्र पर अजीत राज, शैलेश दुबे व रुद्राक्ष शुक्ला ने संगत की।

गोरखपुर विवविद्यालय को मिले नए कुलपति, प्रो. केपी सिंह संभालेंगे कमान

प्रो. कृष्ण पाल सिंह बने गोरखपुर विश्वविद्यालय के नए कुलपति राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने की तीन वर्ष के लिए नियुक्ति पूर्व में रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके हैं



संवाददाता, गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय को नया कुलपति मिल गया है। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली के पूर्व कुलपति प्रो. कृष्ण पाल सिंह को गोरखपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया है। राजभवन की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि यह नियुक्ति कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष की अवधि के लिए प्रभावी होगी। कुलाधिपति ने उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973 की धारा–12 की उपधारा–1 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह नियुक्ति की है। प्रो. सिंह वर्तमान में गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखंड में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। वह इससे पहले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली के कुलपति की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। उनकी नियुक्ति से गोरखपुर विश्वविद्यालय में पिछले कुछ समय से चल रहा नेतृत्व का इंतजार खत्म हो गया है।





बारिश के बीच लोग अपने गंतव्य की ओर जाते नजर आए। बारिश के दौरान सड़कों पर गुजरते वाहन और राहगीरों की तस्वीरें सामने आईं, जिसमें शहर का बारिश से भीगा हुआ माहौल दिखाई दिया।

फटा सिलेंडर, धमाके से ढहा मकान

घटना रात करीब साढ़े आठ बजे की है। राम दुलारे पुत्र सुकई के मकान की ऊपरी मंजिल पर उनकी बहू ज्ञानमती देवी खाना बना रही थीं। इसी दौरान गैस रेगुलेटर में अचानक आग लग गई। उन्होंने कपड़े से आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग सिलेंडर तक पहुंच गई और लपटें तेजी से फैलने लगीं। मिश्रौलिया थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत टेऊवा ग्रांट के टोला मोहम्मद नगर (छोटा डीह) स्थित दलित बस्ती में बुधवार रात एलपीजी सिलेंडर में हुए भीषण विस्फोट से पूरा इलाका दहल उठा। धमाका इतना तेज था कि मकान की पक्की ईंट की दीवारें भरभराकर गिर गईं और घर में रखा कपड़ा, बिस्तर, बर्तन व अनाज समेत अधिकांश घरेलू सामान जलकर नष्ट हो गया। गनीमत रही कि हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। घटना रात करीब साढ़े आठ बजे की है। राम दुलारे पुत्र सुकई के मकान की ऊपरी मंजिल पर उनकी बहू ज्ञानमती देवी खाना बना रही थीं। इसी दौरान गैस रेगुलेटर में अचानक आग लग गई। उन्होंने कपड़े से आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग सिलेंडर तक पहुंच गई और लपटें तेजी से फैलने लगीं।

शोर सुनकर आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। लोगों ने कथरी, गुदरी और पानी की मदद से आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन सिलेंडर लगातार धधकता रहा। स्थिति बिगड़ती देख सभी लोग मकान से बाहर निकलकर सड़क पर आ गए। कुछ ही क्षण बाद तेज धमाके के साथ सिलेंडर फट गया। विस्फोट की आवाज दूर तक सुनाई दी। मकान की दीवारें ढह गईं और ईंटें चारों ओर बिखर गईं। आग की चपेट में आकर घर का अधिकांश सामान भी नष्ट हो गया।

परिवार नीचे होने से बचीं जानें

हादसे के समय परिवार के अधिकांश सदस्य मकान के निचले हिस्से में मौजूद थे, जबकि खाना ऊपरी मंजिल पर बन रहा था। इसी वजह से सिलेंडर विस्फोट के बावजूद कोई व्यक्ति घायल नहीं हुआ। घटना के बाद काफी देर तक दलित बस्ती में अफरा–तफरी का माहौल बना रहा।

गोरखपुर चिड़ियाघर में हिप्पो के तालाब में प्लास्टिक की बोतल फेंकना युवक को पड़ा भारी

चिड़ियाघर कर्मचारियों ने तुरंत बोतल निकालकर हिप्पो को बचाया

संवाददाता, गोरखपुर। चिड़ियाघर में दो सितंबर की दोपहर हिप्पो के बाड़े के पास एक युवक ने पानी से भरी प्लास्टिक की बोतल तालाब में फेंक दी। बोतल पानी में गिरते ही हिप्पो ने उसे मुंह में पकड़ लिया और चबाने लगा। यह देखकर चिड़ियाघर कर्मचारियों ने तत्काल कार्रवाई करते हुए उसके मुंह से बोतल बाहर निकाल दी। समय रहते बोतल निकलने से हिप्पो के उसे निगलने का खतरा टल गया। युवक को मौके पर ही पकड़ लिया गया। युवक की पहचान महाराजगंज जिले के लवकननगर निवासी संजय यादव के रूप में हुई है। वह चिड़ियाघर घूमने आया था। आरोप है कि हिप्पो को चिढ़ाने के इरादे से उसने जानबूझकर प्लास्टिक की बोतल तालाब में फेंकी।

प्लास्टिक वन्यजीवों के लिए बेहद खतरनाक

वनरक्षक सुमित यादव मौके पर पहुंचे। उन्होंने आरोपित से पूछताछ करने के साथ घटनास्थल का निरीक्षण किया। इसके बाद रामगढ़ताल पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने आरोपित के विरुद्ध वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है। मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है। चिड़ियाघर के मुख्य चिकित्साधिकारी डा. योगेश प्रताप सिंह ने बताया कि प्लास्टिक वन्यजीवों के लिए बेहद खतरनाक है। इसे निगलने पर पेट में रुकावट हो सकती है और जानवर गंभीर रूप से बीमार पड़ सकता है। कई मामलों में यह स्थिति जानलेवा भी हो सकती है।स्था और कड़ी करने का निर्णय लिया है।

गोरखपुर एमआर होम से भागे 3 युवक, पकड़े गए

गोरखपुर,संवाददाता। पकड़े गए युवकों ने पूछताछ में कहा, हम स्वस्थ हैं, अब आश्रय गृह में नहीं रहना चाहते। अधिकारियों से कई बार कहा, लेकिन वापस नहीं भेजा गया, इसलिए भागना पड़ा। मंगलवार दी देर रात भागने से पहले युवकों ने एमआर होम में 16 सीसीटीवी और 8 फीट ऊंची दीवार के बावजूद चारों ने मेन गेट के कैमरे का तार काट दिया था। राजघाट स्थित राजकीय मानसिक मंदित आश्रय गृह (एमआर होम) से मंगलवार देर रात भागे चार संवासियों में से तीन को पुलिस ने पकड़ लिया है। रवि गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर मिला, जबकि बबलू और सोमारू आश्रय



गृह के आसपास ही घूमते मिले। चौथे संवासी आजम उर्फ आलम की तलाश जारी है।

पकड़े गए युवकों ने पूछताछ में कहा, हम स्वस्थ हैं, अब आश्रय गृह में नहीं रहना चाहते। अधिकारियों से कई बार कहा, लेकिन वापस नहीं भेजा गया, इसलिए भागना पड़ा। मंगलवार दी देर रात भागने से पहले युवकों ने एमआर होम में 16 सीसीटीवी और 8 फीट ऊंची दीवार के बावजूद चारों ने मेन गेट के कैमरे का तार काट दिया। ड्यूटी पर तैनात गार्ड यादव के सोने का फायदा उठाकर मेन गेट से फरार हो गए।

एमआर होम में 48 संवासी रहते हैं, सुरक्षा में 3 गार्ड 8–8 घंटे की शिफ्ट में तैनात हैं।भागने वालों में रवि (22), आजम (19), बबलू (23) को 4 मई 2014 को लखनऊ बाल सुधार गृह से भेजा गया था, जबकि सोमारू (19) जून 2025 में आया था। बाहर दुकान चलाने वाले दुकानदार के मुताबिक रवि तेज–तर्रार है, उसी ने भागने की योजना बनाई होगी।

गोरखपुर में बड़ी घटना–महिला का निर्वस्त्र शव बरामद, पास में चप्पल–मोबाइल मिला

रेप के बाद हत्या की आशंका



मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने पुलिस को जानकारी दी। सूचना मिलते ही हड़कंप मच गया है। मौके पर एसपी नॉर्थ ज्ञानेंद्र कुमार फॉरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल किया।

गोरखपुर,संवाददाता। झंगहा थाना क्षेत्र स्थित गहिरा गांव में गुरुवार की सुबह एक महिला का निर्वस्त्र शव मिलने से सनसनी फैल गई है। आशंका जताई जा रही है कि महिला के साथ रेप के बाद उसकी हत्या कर शव फेंका गया है । शव से थोड़ी दूर पर ही चप्पल और मोबाइल फोन मिला है जिसे पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। महिला के शव की पहचान नहीं हो सकी है। महिला के गले पर चोट के निशान है। मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने पुलिस को जानकारी दी। सूचना मिलते ही हड़कंप मच गया है। मौके पर एसपी नॉर्थ ज्ञानेंद्र कुमार फॉरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल किया। फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य संकलन किया है और जांच पड़ताल में जुट गई है। घटनास्थल को सील कर दिया गया है।

हादसे में गई जान

दो बाइकों में आमने–सामने टक्कर 2 युवकों की मौत, दो महिलाएं घायल

सिद्धार्थनगर,संवाददाता। मोहाना थाना क्षेत्र के कलीलपुर गांव के टोला जगदीशपुर निवासी संजय (30) पुत्र रामवृक्ष अपनी पत्नी सुशीला (28) के साथ बाइक से दोपहर में किसी मामले में जमानत के लिए जिला मुख्यालय पर आ रहा था। बताया जा रहा है कि अभी सदर थाना क्षेत्र के बर्डपुर–नौगढ़ मार्ग पर स्थित बढ़या गांव के पास पहुंचा था कि इधर से जा रही बाइक से आमने–सामने की टक्कर हो गई। सदर थाना क्षेत्र के बर्डपुर–नौगढ़ मार्ग पर स्थित बढ़या गांव के पास बुधवार दोपहर दो बाइकों की आमने– सामने की टक्कर में दो युवकों की मौत हो गई। वहीं बाइक पर सवार दो महिलाएं घायल हो गईं। माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज में उनका इलाज चल रहा है। एक मृतक और घायल महिला नेपाल की है। दूसरे शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

जानकारी के अनुसार मोहाना थाना क्षेत्र के कलीलपुर गांव के टोला जगदीशपुर निवासी संजय (30) पुत्र रामवृक्ष अपनी पत्नी सुशीला (28) के साथ बाइक से दोपहर में किसी मामले में जमानत के लिए जिला मुख्यालय पर आ रहा था। बताया जा रहा है कि अभी सदर थाना क्षेत्र के बर्डपुर–नौगढ़ मार्ग पर स्थित बढ़या गांव के पास पहुंचा था कि इधर से जा रही बाइक से आमने–सामने की टक्कर हो गई।

इस हादसे में दोनों बाइक सवार दो युवक और महिलाएं घायल हो गईं। हादसा देखकर मौके पर लोगों की भीड़



जुट और एंबुलेंस की मदद से माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज लाया गया, जहां संजय और दूसरे बाइक सवार युवक को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं, सुशीला और दूसरी बाइक सवार महिला का इलाज चल रहा है। महिला और युवक नेपाल के निवासी बताए जा रहे हैं। वह कहां आए थे और कहां जा रहे थे? इसके बारे में जानकारी नहीं हो पा रही है। महिला भी बोलने की स्थिति में नहीं है। वहीं, मौत के बाद संजय के परिवार के लोग मेडिकल कॉलेज पहुंच गए। खबर के बाद गांव में मातम छाया हुआ है। गांव के लोगों के मुताबिक अभी एक माह पहले ही संजय के पिता की मौत हुई थी और वह दुबई से गांव आया था। फिर दुबई जाने की उसकी तैयारी थी। उसकी चार बेटियां हैं। मौत के बाद परिवार के लोगों का रो–रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं, नेपाली युवक की पहचान की कोशिश जारी है।

गोरखपुर में बालिका के परिवार को पुलिसकर्मियों की मदद मिली, तीन बेटियों के नाम 10–10 लाख की एफडी

संवाददाता, गोरखपुर। कोतवाली क्षेत्र में अपहरण, दुष्कर्म और हत्या की शिकार दस वर्षीय बालिका के परिवार को अब जिले के पुलिसकर्मियों की ओर से जुटाई गई सहायता राशि भी मिल गई है। घटना के बाद जिले में तैनात पुलिसकर्मियों ने अपने एक दिन का वेतन देकर परिवार की मदद का निर्णय लिया था। जमा राशि से तीनों बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए 10–10 लाख रुपये की एफडी कराई गई है, जबकि 12 लाख रुपये माता–पिता के बैंक खाते में भेजे गए हैं। सबसे छोटी बेटी का आधार कार्ड नहीं होने के कारण उसके नाम से बैंक खाता खुलवाने की प्रक्रिया चल रही है। खाता खुलने के बाद उसके हिस्से की 10 लाख रुपये की एफडी भी करा दी जाएगी।

बालिका का परिवार मूल रूप से आजमगढ़ का रहने वाला है और गोरखपुर में किराये के कमरे में रहकर जीवनयापन करता था। 28 जुलाई की रात बड़ी बेटी के इलाज के लिए जिला अस्पताल आए परिवार पर उस समय दुखों का पहाड़ टूट पड़ा, जब अस्पताल से दस वर्षीय बेटी का अपहरण कर लिया गया। आरोप बर्खास्त सिपाही अभिषेक यादव पर लगा, जिसने बच्ची को बहला–फुसलाकर बाइक पर बैठाया और चिउटहा पुल के पास ले गया था।

अगली सुबह बच्ची का शव बरामद हुआ। पोस्टमार्टम में दुष्कर्म के बाद हत्या की पुष्टि हुई। पुलिस ने आरोपित सिपाही को गिरफ्तार किया और बाद में सेवा से बर्खास्त कर दिया। 31 जुलाई को आरोपित सिपाही को जेल भेजा गया। कस्टडी रिमांड पर लेकर कोतवाली थाना पुलिस ने आरोपित की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त बांका बरामद किया। विवेचना पूरी करते हुए पुलिस ने घटना के महज छह दिन बाद आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल कर दिया। अब मामले में हर दूसरे दिन सुनवाई हो रही है। घटना के बाद बालिका की मां की तबीयत भी खराब हो गई थी और उनका निजी अस्पताल में उपचार कराया गया,जहां 31 जुलाई की रात उन्होंने एक बेटे को जन्म दिया था। इसी बीच पुलिसकर्मियों ने परिवार की आर्थिक मदद का निर्णय लिया। जिले में तैनात 4400 पुलिसकर्मियों ने एक दिन का वेतन देकर राशि जुटाई, ताकि बच्चियों की पढ़ाई और भविष्य प्रभावित न हो। अब इस राशि का बड़ा हिस्सा बेटियों के नाम सुरक्षित कर दिया गया है। प्रशासन की ओर से परिवार को महारानी लक्ष्मीबाई योजना के तहत भी आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जा चुकी है।

पुलिसकर्मियों ने एक दिन का वेतन देकर सहायता जुटाई। तीन बेटियों के नाम 10–10 लाख की एफडी कराई गई। माता–पिता के खाते में 12 लाख रुपये भेजे गए।

स्वीकृत राशि परिवार के संयुक्त बैंक खाते में भेजी गई थी। पुलिसकर्मियों की सहायता और सरकारी योजना की राशि से परिवार को तत्काल आर्थिक सहारा मिला है, जबकि बेटियों के नाम की एफडी उनके भविष्य के लिए सुरक्षित रहेगी। सीओ कोतवाली ओंकार दत्त ने बताया कि पुलिस की ओर से परिवार को सहायता राशि उपलब्ध करा दी गई है।

मानीराम में नो–इंट्री में रुपये लेने का आरोप

गोरखपुर में नो–इंट्री बैरियर हटाने के लिए हेलमेट में रुपये लेने का वीडियो वायरल, हटाया गया होमगार्ड

संवाददाता, गोरखपुर। मानीराम के महुआतार मोड़ पर नो–इंट्री में भारी वाहनों को प्रवेश देने के नाम पर रुपये लेने का आरोप लगा है। इससे जुड़ा वीडियो इंस्टाग्राम पर प्रसारित हो रहा है। वीडियो में फ्लाईओवर के नीचे यातायात सिपाही और होमगार्ड मौजूद दिखाई दे रहे हैं। इसी दौरान एक युवक पैदल पहुंचता है, होमगार्ड की बाइक में टंगे हेलमेट के भीतर कुछ रखता है और फिर बैरियर हटाता दिखाई देता है।

वीडियो पोस्ट करने वाले का दावा है कि हेलमेट में रुपये रखे गए और इसके बाद भारी वाहन को नो–इंट्री में प्रवेश दिया गया। हालांकि, वीडियो से इसकी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। प्रसारित वीडियो मानीराम के महुआतार मोड़ फ्लाईओवर के नीचे का बताया जा रहा है।

यहां नो–इंट्री रोकने के लिए बैरियर लगा दिखाई देता है। पास में यातायात सिपाही और होमगार्ड भी मौजूद हैं। इसी बीच एक युवक पैदल ही होमगार्ड की ओर बढ़ता है। उसकी बाइक में टंगे हेलमेट के अंदर कुछ रखकर लौटता है और इसके बाद बैरियर हटाता दिखाई देता है। वीडियो पोस्ट करने वाले ने इसी घटनाक्रम को रुपये के लेनदेन से जोड़ते हुए आरोप लगाया है कि नो–इंट्री में भारी वाहनों को प्रवेश देने के लिए रुपये लिए जा रहे हैं। वीडियो में हेलमेट के भीतर रखी गई वस्तु स्पष्ट नहीं दिख रही है।

भाई कालेज में अधिकारी तो बहन हैं जेएनयू में प्रोफेसर

देवरिया,संवाददाता। जितेंद्र मिश्रा के चाचा रामप्यारे मिश्र ने बताया कि उनका पूरा परिवार दिल्ली में ही रहता है। जितेंद्र मिश्र के पिता नथुनी मिश्र दिल्ली विश्वविद्यालय में कामर्स विषय के प्रोफेसर थे। यूपी के देवरिया जिले के श्रीरामपुर थाना क्षेत्र के भोपतपुरा गांव निवासी और भारतीय वायुसेना के पूर्व एयर मार्शल जितेंद्र मिश्रा को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) नियुक्त किए जाने की खबर से उनके पैतृक गांव में उत्सव का माहौल है। बड़ी संख्या में लोगों ने उनके घर पहुंचकर बधाई दी।

भाई मेडिकल कॉलेज में और बहन जेएनयू में प्रोफेसर



जितेंद्र मिश्रा के चाचा रामप्यारे मिश्र ने बताया कि उनका पूरा परिवार दिल्ली में ही रहता है। जितेंद्र मिश्र के पिता नथुनी मिश्र दिल्ली विश्वविद्यालय में कामर्स विषय के प्रोफेसर थे। जितेंद्र मिश्र के छोटे भाई डॉ. देवेंद्र मिश्र दिल्ली में ही एक मेडिकल कॉलेज में प्रशासनिक पद पर हैं, वहीं बहन डॉ. वंदना मिश्रा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में प्रोफेसर हैं।

1986 में वायुसेना में हुए थे शामिल

जितेंद्र मिश्रा ने छह दिसंबर 1986 को भारतीय वायुसेना में कमीशन प्राप्त किया था। उन्होंने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए), पुणे समेत कई प्रतिष्ठित सैन्य संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त किया। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान उन्होंने अपने नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया था, जिसके लिए उन्हें सर्वोत्तम युद्ध सेवा मेडल से भी सम्मानित किया जा चुका है।

सीईओ बनने के बाद क्या बोले– जितेंद्र मिश्रा

अपनी इस नई और पावन जिम्मेदारी पर खुशी जाहिर करते हुए जितेंद्र मिश्रा ने कहा, श्इतने सारे योग्य उम्मीदवारों में से मुझे इस पद के लिए चुना गया, यह मेरे लिए बहुत बड़े सौभाग्य की बात है। मैं इसे भगवान श्रीराम का आशीर्वाद मानता हूं। भारतीय वायुसेना में 43 वर्षों तक देश की सेवा करने के बाद, अब मुझे श्रीराम मंदिर और रामभक्तों की सेवा करने का यह पवित्र अवसर मिला है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पहले सीईओ एयर मार्शल जितेंद्र मिश्रा (रिटायर्ड) ने यह भी कहा कि जैसा कि मैंने कहा, मैं सिलेक्शन कमिटी, श्री राम मंदिर ट्रस्ट और भगवान राम का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि उन्होंने मुझे इस ज़िम्मेदारी के लिए चुना। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वे मुझे इतनी क्षमता दें कि मैं इसे अच्छे से निभा सकूं।

हादसे में गई जान– जल जीवन मिशन की टंकी का छज्जा गिरा

40 फीट नीचे गिरे 2 मजदूर, एक की मौत

सिद्धार्थनगर,संवाददाता। हादसे में लड्डन अली पुत्र हनीफ निवासी सोहंग महुआ खुर्द, थाना तुर्कपट्टी, जनपद कुशीनगर और शोभराज, निवासी अहिरौली गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को तत्काल जिला अस्पताल संतकबीरनगर ले जाया गया। शोभराज के सिर में गंभीर चोट होने के कारण डॉक्टरों ने उन्हें गोरखपुर मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया, जहां उपचार के दौरान बुधवार देर शाम उनकी मौत हो गई। महुली थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत भैंसही उर्फ भैंसवारिया में जल जीवन मिशन के तहत निर्माणाधीन पानी की टंकी का छज्जा और शटरिंग टूटकर करीब 40 फीट नीचे गिर गया। हादसे में दो मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए। एक मजदूर की इलाज के दौरान गोरखपुर मेडिकल कॉलेज में बुधवार देर शाम मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, गांव में जल जीवन मिशन के तहत पानी की टंकी का निर्माण कराया जा रहा है। बुधवार को करीब 40 फीट ऊंची टंकी की सीढ़ी के छज्जे की ढलाई का कार्य चल रहा था। इसी दौरान अचानक छज्जा और शटरिंग का एक बड़ा हिस्सा भरभराकर नीचे गिर गया। हादसे में लड्डन अली पुत्र हनीफ निवासी सोहंग महुआ खुर्द, थाना तुर्कपट्टी, जनपद कुशीनगर और शोभराज, निवासी अहिरौली गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को तत्काल जिला अस्पताल संतकबीरनगर ले जाया गया। शोभराज के सिर में गंभीर चोट होने के कारण डॉक्टरों ने उन्हें गोरखपुर मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया, जहां उपचार के दौरान बुधवार देर शाम उनकी मौत हो गई।



इधर, ग्रामीणों ने निर्माण कार्य में घटिया सामग्री के प्रयोग का आरोप लगाया है। ग्रामीणों का कहना है कि छज्जे के निर्माण में मानक के अनुरूप मजबूत सरिया का इस्तेमाल नहीं किया गया था। गुणवत्ता को लेकर पहले भी शिकायत की गई थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।

घायल मजदूर लड्डन अली ने बताया कि वह करीब एक महीने पहले अपने भाई सेराज व अन्य साथियों के साथ एक ठेकेदार के माध्यम से यहां मजदूरी करने आया था। हादसे में उसके पैर और आंख में गंभीर चोटें आई हैं। आरोप है कि घटना के बाद ठेकेदार मौके से फरार हो गया और घायलों के उपचार की उचित व्यवस्था नहीं की गई। हादसे के बाद कार्यस्थल पर मौजूद अन्य मजदूर भी वहां से चले गए। घटना की सूचना पर मृतक के घर में कोहराम मच गया। वहीं, स्थानीय लोगों में जल जीवन मिशन के तहत हो रहे निर्माण कार्यों की गुणवत्ता को लेकर भारी आक्रोश है।

टिकट किसे मिले वो अलग बात

फिलहाल इन छह सीटों पर 174 तलबगार, सबसे अधिक इस पार्टी से तो सबसे कम इस दल से

मुरादाबाद,संवाददाता। यूपी में सभी दल विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटने लगे हैं। ऐसे में यूपी के मुरादाबाद जिले की छह विधानसभा सीटों के दावेदार सामने आने लगे हैं। ठाकुरद्वारा सीट पर सबसे अधिक 38 दावेदार सामने आए हैं। भाजपा, सपा, कांग्रेस और बसपा से भी दावेदार सामने आ रहे हैं। कांग्रेस से सबसे ज्यादा 62 और सबसे कम सपा से 33 ने दावेदारी पेश की है। उत्तर प्रदेश में चुनावी मोड पर चल रहे राजनीतिक दलों से टिकट के दावेदार सामने आने लगे हैं। अभी तक जिले की छह विधानसभा सीटों के लिए भाजपा, सपा, कांग्रेस और बसपा से 174 ने दावेदारी पेश की है। कांग्रेस से सबसे ज्यादा 62 और सपा से सबसे कम 33 दावेदार हैं।

जिले में छह विधानसभा सीटें हैं। मौजूदा समय में चार पर सपा और दो पर भाजपा काबिज है। जैसे–जैसे विधानसभा चुनाव का समय नजदीक आ रहा है वैसे–वैसे टिकट के दावेदार सामने आने लगे हैं। कुछ खुलकर अपने टिकट की पैरोकारी कर रहे हैं तो कुछ अभी पर्दे के पीछे से अपनी सियासत चमकाने में लगे हैं।

मुरादाबाद जिले की छह सीटों पर भाजपा, सपा, कांग्रेस और बसपा के टिकट पर 174 ने विधानसभा चुनाव लड़ने की इच्छा जताई है। इसमें भाजपा के 37, सपा के 33, कांग्रेस के 62 और बसपा के 42 दावेदार शामिल हैं। इन दावेदारों में मौजूदा विधायकों के अलावा पूर्व विधायक, पूर्व सांसद समेत राजनीतिक दलों के पूर्व और वर्तमान पदाधिकारी भी शामिल हैं। पार्टियों के जिलाध्यक्षों का कहना है कि अभी प्रदेश नेतृत्व की ओर से टिकट के लिए आवेदन नहीं लिए जा रहे हैं। पार्टी से जुड़े पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि अपने–अपने तरीके से टिकट के लिए प्रयास कर रहे हैं।



ठाकुरद्वारा सीट पर सबसे अधिक 38 दावेदार

मुरादाबाद जिले की ठाकुरद्वारा विधानसभा सीट पर टिकट के लिए सबसे ज्यादा घमासान दिख रहा है। इस सीट पर अब तक भाजपा, सपा, कांग्रेस और बसपा से 38 दावेदार सामने आ चुके हैं। जबकि सबसे कम 19 दावेदार कुंदरकी विधानसभा सीट पर हैं। मुरादाबाद नगर सीट से 36, बिलारी से 33, देहात से 25 और कांठ से 23 दावेदारों के नाम चर्चा में हैं।

फटा सिलेंडर, धमाके से ढहा मकान, दीवारें गिरीं

सिद्धार्थनगर,संवाददाता। घटना रात करीब साढ़े आठ बजे की है। राम दुलारे पुत्र सुकई के मकान की ऊपरी मंजिल पर उनकी बहू ज्ञानमती देवी खाना बना रही थीं। इसी दौरान गैस रेगुलेटर में अचानक आग लग गई। उन्होंने कपड़े से आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग सिलेंडर तक पहुंच गई और लपटें तेजी से फैलने लगीं।

मिश्रौलिया थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत टेऊवा ग्रांट के टोला मोहम्मद नगर (छोटा डीह) स्थित दलित बस्ती में बुधवार रात एलपीजी सिलेंडर में हुए भीषण विस्फोट से पूरा इलाका दहल उठा। धमाका इतना तेज था कि मकान की पक्की ईंट की दीवारें भरभराकर गिर गईं और घर में रखा कपड़ा, बिस्तर, बर्तन व अनाज समेत अधिकांश घरेलू सामान जलकर नष्ट हो गया। गनीमत रही कि हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। घटना रात करीब साढ़े आठ बजे की है। राम दुलारे पुत्र सुकई के मकान की ऊपरी मंजिल पर उनकी बहू ज्ञानमती देवी खाना बना रही थीं। इसी दौरान गैस रेगुलेटर में अचानक आग लग गई। उन्होंने कपड़े से आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग सिलेंडर तक पहुंच गई और लपटें तेजी से फैलने लगीं। आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। लोगों ने कथरी, गुदरी और पानी की मदद से आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन सिलेंडर लगातार धधकता रहा। स्थिति बिगड़ती देख सभी लोग मकान से बाहर निकलकर सड़क पर आ गए। कुछ ही क्षण बाद तेज धमाके के साथ सिलेंडर फट गया। विस्फोट की आवाज दूर तक सुनाई दी। मकान की दीवारें ढह गईं और ईंटें चारों ओर बिखर गईं। आग की चपेट में आकर घर का अधिकांश सामान भी नष्ट हो गया। हादसे के समय परिवार के अधिकांश सदस्य मकान के निचले हिस्से में मौजूद थे।



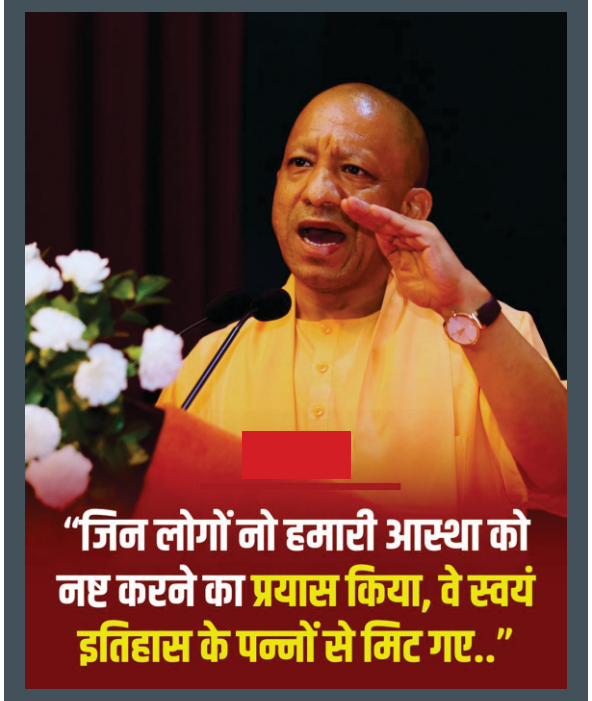
वाराणसी में बरसात में सड़कों और गलियों में जलभराव पर नगर निगम और जिला प्रशासन को हाई कोर्ट की फटकार

हाई कोर्ट ने वाराणसी जलभराव पर प्रशासन, नगर निगम को फटकारा। अधिकारियों को शपथपत्र दाखिल करने या व्यक्तिगत पेशी का आदेश। नालों की सफाई के दावों के बावजूद जलभराव की शिकायतें।

संवाददाता, प्रयागराज/वाराणसी। शहर पानी पानी होने के बाद अब प्रकरण कोर्ट की चौखट तक जा पहुंचा है। इलाहाबाद हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति जेजे मुनीर और न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की खंडपीठ ने वाराणसी में जलभराव की समस्या को लेकर दाखिल याचिका पर सुनवाई करते हुए जिला प्रशासन और नगर निगम को कड़ी फटकार लगाई है। यह जनहित याचिका कमलाकांत त्रिपाठी और अन्य द्वारा दायर की गई थी। कोर्ट ने 17 अगस्त 2026 को राज्य सरकार, डीएम वाराणसी और नगर निगम आयुक्त को दो सप्ताह के भीतर प्रति–शपथपत्र दाखिल करने का आदेश दिया था। कोर्ट को सूचित किया गया कि 31 अगस्त 2026 की कार्यालय रिपोर्ट के अनुसार दोनों अधिकारियों को नोटिस तामील हो चुका है, लेकिन किसी भी अधिकारी ने न तो प्रति–शपथपत्र दाखिल किया और न ही कोई रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस पर खंडपीठ ने नाराजगी जताते हुए आदेश दिया कि दोनों अधिकारी परसों तक बिना किसी विफलता के अपने शपथपत्र दाखिल करें। जो भी अधिकारी ऐसा करने में असफल रहेगा, उसे व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में उपस्थित होना होगा। मामले की अगली सुनवाई तीन सितंबर को दोपहर दो बजे होगी। नगर निगम ने एक से 15 जून तक अभियान में 386 नालों की सफाई का दावा किया था। इसके बाद इस अवधि को बढ़ाया गया। बड़े नालों की सफाई के लिए 31 फर्मों को लगाया गया और 4.50 करोड़ का टेंडर हुआ, जबकि पिछले वर्ष इन्हीं पर 4.35 करोड़ खर्च हुए थे। 20–25 जेसीबी, 600 मजदूर और 200 छोटे–बड़े वाहन लगाए गए। इसके बावजूद बारिश में गली पिट और नालियों के जाम होने की शिकायतें सामने आ रही हैं। सड़क अनुरक्षण के लिए आठ करोड़, सड़क मरम्मत के लिए छह करोड़, गलियों के रखरखाव के लिए आठ करोड़ और वर्षा जल निकासी के लिए छह करोड़ का बजट प्रस्तावित है। मलिन बस्तियों में सड़क–नाला मरम्मत के लिए 30 करोड़, सीवर मेनहोल के लिए 3.50 करोड़, सीवर वाहिनियों और मेनहोल मरम्मत के लिए 17.60 करोड़ और मेन सीवर लाइन सफाई के लिए 50 करोड़ रुपये का प्रविधान है। वाराणसी में जलभराव की समस्या को लेकर प्रशासन की लापरवाही और नगर निगम की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं। कोर्ट की फटकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अधिकारियों को अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना होगा। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो उन्हें कोर्ट में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होना पड़ेगा।

इस मामले में आगे की सुनवाई 3 सितंबर को होगी, जिसमें यह देखा जाएगा कि प्रशासन और नगर निगम ने कोर्ट के आदेशों का पालन किया है या नहीं। वाराणसी की जनता को जलभराव की समस्या से राहत दिलाने के लिए यह आवश्यक है कि संबंधित अधिकारी गंभीरता से कार्य करें और अपनी जिम्मेदारियों को समझें। वाराणसी में जलभराव की समस्या एक गंभीर मुद्दा बन चुकी है, जिसे हल करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। कोर्ट की फटकार ने इस दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत दिया है।









अच्छा वक्ता बनने के टिप्स दीजिए

प्रधानमंत्री मोदी का शिक्षिका से सवाल, जवाब पर जमकर लगे ठहाके

नई दिल्ली,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों के साथ बातचीत की। इस दौरान उन्होंने खुद को विद्यार्थी मानते हुए सावल पूछा कि कुशल वक्ता बनने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। शिक्षिका ने आत्मविश्वास और लगातार अभ्यास को जरूरी बताया। इस दौरान शिक्षिका ने कहा कि आपका और देखकर मेरा ही और कम हो गया। इतना बोलते ही पूरे हॉल में खुशनुमा माहौल हो गया। सभी लोग ठहाके लगाने लगे। आगे की बातचीत में पीएम मोदी ने स्क्रीन की लत, खेल, रचनात्मक गतिविधियों, ड्रेस कोड और बच्चों के बचपन को लेकर भी शिक्षकों को संदेश भी दिया। पीएम मोदी ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों से शुक्रवार को मुलाकात की। उन्होंने इस बातचीत का एक वीडियो भी जारी किया। और एक्स अकाउंट पर लिखा कि शिक्षक दिवस शिक्षकों के समाज में महत्वपूर्ण योगदान को सम्मान देने का अवसर है। यह दिन भारत के महान शिक्षाविद और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि देने के लिए भी मनाया जाता है। आइए, जानते हैं पीएम मोदी ने शिक्षकों से किन–किन मुद्दों पर बात की। इस दौरान उन्होंने एक शिक्षिका से अपने सार्वजनिक भाषण कौशल को बेहतर बनाने का सुझाव मांगा। पीएम मोदी ने कहा कि अगर मैं आपका विद्यार्थी होता और एक कुशल वक्ता बनना चाहता, तो आप मुझे क्या सुझाव देतीं? मुझे क्या करना चाहिए? इस सवाल के जवाब में अध्यापिका ने कहा कि आपको पहले कॉन्फिडेंस होना है। इसके बाद वहां मौजूद सभी शिक्षिक हंसने लगे। इस खुशनुमा माहौल में पीएम मोदी भी हंसने लगे। इसके बाद शिक्षिका ने कहा हंसते हुए कहा कि सर, आपका इतना औरा देखकर मेरा औरा ही डाउन हो गया। इसके बाद पीएम मोदी ने मुस्कुराते हुए कहा कि यानी आपको पब्लिक स्पीकर होना है तो आपके अंदर औरा नहीं होना चाहिए। फिर शिक्षिका ने कहा, नहीं, औरा होना चाहिए सर।श फिर पीएम मोदी ने कहा, औरा होगा तो लोग आपको सुनेंगे ही नहीं, औरा ही देखते रह जाएंगे। इसके जवाब में शिक्षिका ने कहा, सर आपको तो लोग देखते ही रहेंगे।





नेपाल बाढ़–चीन नहीं दे रहा कोई जानकारी

लापता लोगों की तलाश में परिजन बेहाल, बोले– सूचना कहां से मिले

न्यूयॉर्क/तिब्बत ,एजेंसी। नेपाल–तिब्बत सीमा पर बाढ़ के बाद तिब्बत में लापता लोगों के परिजन अपनों की खबर के लिए परेशान हैं। परिवारों का आरोप है कि चीन से पर्याप्त जानकारी नहीं मिल रही और वे सोशल मीडिया, नेपाल व विदेशी दूतावासों से सुराग जुटा रहे हैं। चीन के आधिकारिक आंकड़ों और सूचना प्रतिबंधों पर भी सवाल उठ रहे हैं।

नेपाल–तिब्बत सीमा पर ग्लेशियर टूटने के बाद आई विनाशकारी बाढ़ को एक सप्ताह से ज्यादा समय बीत चुका है, लेकिन तिब्बत में लापता लोगों के परिजन अब भी अपने अपनों की खबर के लिए परेशान हैं। परिवारों का कहना है कि उन्हें चीन की ओर से पर्याप्त जानकारी नहीं मिल रही और उन्हें सोशल मीडिया, नेपाल तथा विदेशी दूतावासों से मिलने वाली सूचनाओं पर निर्भर रहना पड़ रहा है। चीन के सिचुआन प्रांत की 31 वर्षीय फैन होंग भी ऐसे ही परिवारों में शामिल हैं। उनके पति लिन बो नेपाल में एक चीनी हाईवे परियोजना पर काम कर रहे थे। आपदा की सुबह पति से आखिरी बार बात हुई थी। इसके बाद संपर्क नहीं हो पाया। फैन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म रेडनोट पर अपने पति की जानकारी मांगते हुए पोस्ट किया। पोस्ट को 18 हजार से ज्यादा लाइक्स और करीब 4,600 कमेंट मिल चुके हैं। उनका कहना है कि वह अधिकारियों से स्थिति की जानकारी हासिल करने की कोशिश कर रही हैं, लेकिन उन्हें कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पाई है।

नेपाल–तिब्बत सीमा पर लिन बो कहां लापता हुए?

लिन बो 2024 से स्याफ्रुबेसी–रसुवागढ़ी हाईवे की मरम्मत परियोजना से जुड़े थे। यह सड़क नेपाल को तिब्बत के ग्यिरोंग बॉर्डर क्रॉसिंग के जरिए चीन से जोड़ती है। वह निर्माण स्थल पर रह रहे थे और सड़क के करीब 16 किलोमीटर लंबे हिस्से पर काम कर रहे थे। फैन के मुताबिक, निर्माण स्थल तक बचाव अभियान आगे नहीं बढ़ पा रहा है। लापता लोगों के परिजन चीनी अधिकारियों से अपने ड्रोन या हेलीकॉप्टर भेजने की अनुमति देने की मांग कर रहे हैं, ताकि प्रभावित इलाके में अपने स्तर पर तलाश की जा सके।

तिब्बत में कितने लोग अब भी लापता हैं?

नेपाल–तिब्बत सीमा पर ग्लेशियर टूटने के बाद आई बाढ़ ने कई गांवों को तबाह कर दिया और 1,200 से ज्यादा लोगों की जान गई।

नेपाल के अधिकारियों के अनुसार शुक्रवार तक करीब 4,800 लोग लापता थे।

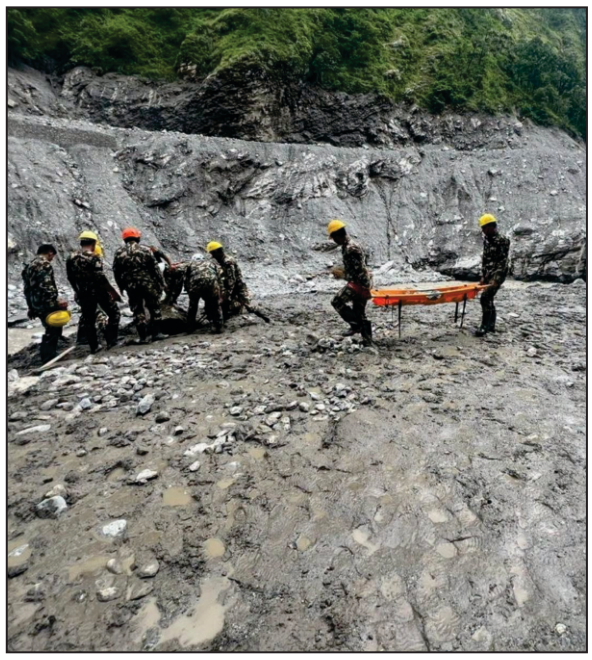
वहीं चीनी अधिकारियों ने तिब्बत की तरफ 541 लोगों के अब भी लापता होने की जानकारी दी है।

इनमें 23 देशों के 261 विदेशी नागरिक शामिल हैं।

चीन की ओर से गुरुवार तक आधिकारिक तौर पर 21 लोगों की मौत की पुष्टि की गई थी।

चीन के आधिकारिक आंकड़ों पर क्यों उठ रहे सवाल?

तिब्बत से जुड़े संगठनों ने चीन की ओर से बताए गए मृतकों के आंकड़े पर चिंता जताई है। उनका कहना है कि सामने आए वीडियो में तबाही का स्तर काफी व्यापक दिखाई देता है, जबकि आधिकारिक तौर पर मौतों का आंकड़ा अपेक्षाकृत कम बताया गया है। तिब्बत वॉच की टेनजिन चोएकी ने कहा कि उपलब्ध जानकारी की कमी के कारण लोग केवल अनुमान लगाने को मजबूर हैं। उनका कहना था कि यह स्थिति बेहद चिंताजनक है। तिब्बती पुलिस ने 30 अगस्त को बताया था कि ऑनलाइन आपदा के पैमाने को लेकर अधिकारियों के अनुसार गलत जानकारी फैलाने के आरोप में 10 लोगों के खिलाफ कार्रवाई की गई। अमेरिका स्थित इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत की अध्यक्ष टेंचो ग्यात्सो ने कहा कि इस तरह की कार्रवाई से न केवल आपदा और राहत अभियान की सार्वजनिक जानकारी प्रभावित हो रही है, बल्कि यह पता लगाने में भी मुश्किल हो रही है कि प्रभावित समुदायों की स्थिति क्या है और उन्हें मदद मिल रही है या नहीं। संगठन के मुताबिक, कुछ सूत्रों ने बाहरी संगठनों से बात करने को लेकर सुरक्षा संबंधी चिंता भी जताई है।



लापता लोगों की तलाश में परिवार सोशल मीडिया पर क्यों निर्भर हैं?

चीन में कई परिवार अपने लापता परिजनों के बारे में जानकारी जुटाने के लिए नेपाल, विदेशी दूतावासों और सोशल मीडिया का सहारा ले रहे हैं। डॉयिन पर लापता सीमा सुरक्षा अधिकारियों की तस्वीरें भी साझा की जा रही हैं। फैन होंग का कहना है कि उन्हें सबसे ज्यादा जानकारी नेपाल से मिल रही है। उन्होंने सवाल उठाया कि स्याफ्रुबेसी–रसुवागढ़ी हाईवे परियोजना में काम करने वाले कर्मचारियों को लेकर पर्याप्त चर्चा नहीं हो रही और ज्यादातर खबरें नेपाल के जलविद्युत स्टेशन पर केंद्रित हैं।

तिब्बत में लापता विदेशी परिवारों की तलाश कैसे चल रही है?

लापता लोगों में विदेशी नागरिक भी शामिल हैं। ब्रिटिश नागरिक श्रीधर अव्वारी, उनकी पत्नी दीप्ति और 14 वर्षीय बेटा अभिनव 26 अगस्त को ग्यिरोंग के इमिग्रेशन क्षेत्र के पास लापता हुए थे। परिवार भारत में रहता है और रिश्तेदारों का मानना है कि वे तिब्बत की तरफ चले गए थे। परिवार के मुताबिक, दीप्ति ने आखिरी बातचीत में नेटवर्क नहीं होने की बात कही थी और बाद में संपर्क करने का भरोसा दिया था। बाढ़ के बाद उनका फोन भी कनेक्ट नहीं हो पाया। परिवार की रिश्तेदार प्रियंका रपाका ने कहा कि चीन की ओर से उन्हें कोई जानकारी नहीं मिली और वे ऑनलाइन यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि कितने लोगों को बचाया गया और कितनी मौतें हुई हैं।

क्या चीन ने मुख्य आपदा क्षेत्र तक पहुंच बना ली है?

चीनी अधिकारियों के अनुसार अब मुख्य आपदा क्षेत्र तक सड़क के जरिए पहुंच बनाई जा चुकी है। सरकारी मीडिया ने इलाके में खोज और बचाव अभियान जारी होने की जानकारी दी है। अधिकारियों के मुताबिक सैकड़ों लापता लोगों की तलाश की जा रही है। इस बीच, भारत से नेपाल पहुंचे एक अन्य परिवार का सदस्य भी अपनी लापता बहन की खबर का इंतजार कर रहा है। उनका कहना है कि चीनी अधिकारियों से जानकारी हासिल करना मुश्किल हो रहा है और उन्हें ब्रिटेन के दूतावास के जरिए अपडेट मिलने की बात कही जा रही है। लापता लोगों के परिजनों के लिए हर गुजरता दिन चिंता बढ़ा रहा है। उन्हें अब भी इस बात का इंतजार है कि चीन की ओर से उनके अपनों के बारे में स्पष्ट और भरोसेमंद जानकारी कब सामने आएगी।

मिर्जापुर में आपका स्वागत है



एंटरटेनमेंट डेस्क। जहां मिर्जापुर वेब सीरीज में पंकज त्रिपाठी, दिव्येंदु, अली फजल मुख्य किरदारों में थे। वहीं शमिर्जापुरश फिल्म में कई स्टार एक्टर्स की एंट्री होने वाली है। कभी ओटीटी से वेब सीरीज के तौर पर शुरू हुआ शमिर्जापुरश का सफर 4 सितंबर को सिनेमाघर की मंजिल तक पहुंचने वाला है। इस सीरीज को दर्शकों ने काफी प्यार दिया था। इसके बाद मेकर्स ने इसे बड़े पैमाने पर रिलीज करने का फैसला किया। मिर्जापुर की गद्दी के इर्द–गिर्द बुनी गई इस कहानी के कारवां में अब कई नए मुसाफिर भी जुड़ गए हैं। जानें कौन हैं वो किरदार जो इस फिल्म के रोमांच को दोगुना करने जा रहा हैं।

रवि किशन

इन दिनों अभिनेता और सांसद रवि किशन सोशल मीडिया पर काफी चर्चित चहरा बन चुके हैं। फिल्म मिर्जापुर में एक्टर बब्बन बबुआ का किरदार निभाएंगे। यह मिर्जापुर प्रेमियों के लिए एक नया अनुभव होगा। वहीं क्या इस किरदार से रवि किशन अपनी पॉपुलैरिटी में चार चांद लगा पाएंगे? यह तो फिल्म रिलीज के बाद ही पता चलेगा।

जितेंद्र कुमार

मिर्जापुर सीरीज के पहले सीजन में बबलू पंडित का किरदार दर्शकों के लिए काफी खास रहा। इस किरदार को अब तक विक्रांत मैसी ने निभाया था। मगर फिल्म में एक्टर जीतेंद्र कुमार, इस किरदार को निभाएंगे। जीतेंद्र इससे पहले वेब सीरीज पंचायत में सचिव जी के किरदार में नजर आ चुके हैं।

सोनल चौहान

2008 में रिलीज हुई फिल्म जन्नत में एक्ट्रेस सोनल चौहान को दर्शकों ने बहुत प्यार दिया था। मगर इस फिल्म के कई साल बाद वह किसी बड़े प्रोजेक्ट में नजर आने वाली हैं। मिर्जापुर में उन्होंने मुमताज बीबी का रोल निभाया है।

मोहित मलिक

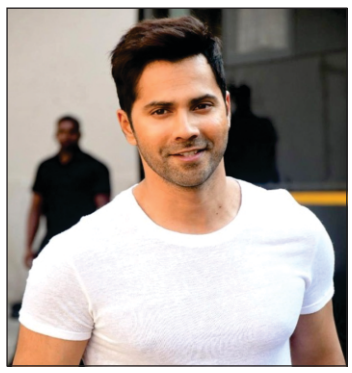
टेलीविजन का चर्चित चेहरा मोहित मलिक भी इस बार फिल्म मिर्जापुर का हिस्सा होगें। बनूं मैं तेरी दुल्हन और डोली अरमानों की सीरियल से मोहित घर–घर में मशहूर हुए थे। मगर अब वह जल्द बड़ी स्क्रीन पर दिखाई देंगे। वह फिल्म में बिरजू लौहार का किरदार का निभाएंगे।

सुशांत सिंह

अभिनेता सुशांत सिंह को बॉलीवुड में उनके दमादार किरदारों के लिए जाना जाता है। उन्होंने क्राइम बेस्ड कई सीरियल्स और फिल्म में पहले भी काम किया है। फिल्म मिर्जापुर में वह भैरव सिंह नाम के किरदार में नजर आएंगे।

फिल्मों की चकाचौंध से दूर वरुण धवन क्यों करने लगे खेती

व्हाइट पेंट–शर्ट में बोते दिखे धान, चलाते दिखे फावड़ा



ग्लैमर और चकाचौंध की दुनिया से दूर बॉलीवुड स्टार वरुण धवन अचानक खेत में कीचड़ के बीच काम करते नजर आए. सफेद कपड़ों में फावड़ा थामे धान रोपते वरुण का ये सादगी भरा देसी अंदाज इंटरनेट पर लोगों का खूब ध्यान खींच रहा है. आखिर क्या है माजरा, चलिए बताते हैं.

बॉलीवुड स्टार वरुण धवन इन दिनों फिल्मों की चकाचौंध और मुंबई की भागदौड़ से दूर एक नए अंदाज में नजर आ रहे हैं. वरुण ने हाल ही में अपने सोशल मीडिया अकांउट पर अपने खेत से जुड़ी कुछ तस्वीरें पोस्ट की हैं. इन तस्वीरों में वे सफेद कपड़े पहनकर हाथ में फावड़ा थामे और कीचड़ के बीच धान रोपते दिखाई दे रहे हैं. उनका ये सिंपल और बिल्कुल देसी अंदाज फैंस को काफी पसंद आ रहा है. हर कोई उनके इस बदले हुए लाइफस्टाइल और काम को देखकर हैरान भी है.

उनकी खूब तारीफ हो रही है. वरुण ने हाल ही में अपनी खुद की खेती की जमीन खरीदी है, जिसे वे अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी कामयाबी बता रहे हैं. उन्होंने खेत में बैठकर चाय–बिस्किट खाते हुए एक प्यारा सा वीडियो भी शेयर किया. इसमें वरुण कहते दिख रहे हैं, 'मैंने खेत लिया है. ये खेत. मैंने ये लिया है और मुझसे मत पूछिए कि क्यों, लेकिन इस मौसम में यहां खड़े होकर चाय और बिस्किट खाने का मजा ही कुछ अलग है'. शहर के शोर से दूर ये प्यारा पल उनके दिल को छू गया.

सुकून की तलाश और नया ठिकाना

हालांकि, वरुण धवन ने अभी ये साफ–साफ नहीं बताया कि आखिर उनका ये खेत कहां पर है और कितना बड़ा है. साथ ही उन्होंने ये भी नहीं बताया कि धान के अलावा वे आगे चलकर वहां क्या–क्या उगाने वाले हैं, लेकिन उनका ये फैसला दिखाता है कि उन्हें नेचर के बीच कितना सुकून मिल रहा है. किसी बड़े जश्न की जगह उन्होंने बेहद सादगी से अपने इस खास पल को जिया. उनका मानना है कि मिट्टी से जुड़कर काम करने में जो खुशी है, वे किसी बड़ी लग्जरी में भी नहीं मिल सकती.

2 करोड़ बजट, 7000 शोज और 36 गुना कमाई... बॉक्स ऑफिस पर हुआ चमत्कार! भ्दनउंद ।दी की दीवानी हुई ऑडियंस; मिली 9.2 की रेटिंग

बॉलीवुड सितारों में बढ़ता खेती का क्रेज

बॉलीवुड में अब सिर्फ ग्लैमर ही नहीं, बल्कि गांव और मिट्टी से जुड़ने का ट्रेंड भी काफी बढ़ रहा है. वरुण से पहले भी कई बड़े सितारे खेती में अपनी डीप इंटरेस्ट दिखा चुके हैं. इस लिस्ट में सलमान खान, जैकी श्रॉफ, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, आर माधवन, प्रीति जिंटा, पंकज त्रिपाठी, जूही चावला और रणबीर कपूर जैसे नाम बड़े शामिल हैं. ये सभी सितारे अक्सर अपने फार्म पर वक्त बिताते हैं और ऑर्गेनिक फल–सब्जियां उगाने का शौक खुलकर पूरा करते हैं, जो काफी पसंद किया जाता है.

काम और जिंदगी के बीच तालमेल

2012 में करण जौहर की फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' से अपनी फिल्मी करियर की शुरुआत करने वाले वरुण ने 'बद्रीनाथ की दुल्हनिया' और 'है जवानी तो इश्क होना है' जैसी कई शानदार फिल्में की हैं. फिल्मों में लगातार बिजी रहने के बाद भी उन्होंने अपनी पर्सनल लाइफ के लिए ये वक्त निकाला है. उनका ये कदम दिखाता है कि वे अपनी हेल्थ, मेंटल पीस और नेचर को कितना जरूरी मानते हैं. शूटिंग की भारी थकान के बाद खेत में बिताए ये पल उन्हें अंदर से नई एनर्जी और ताजगी भर देंगे।



प्रियंका ने कब दिया था निक को अपना नंबर?



एंटरटेनमेंट डेस्क। अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा ने अपने हालिया सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए हमसफर निक जोनस के साथ रिलेशनशिप के शुरुआती दोनों को याद किया है। साथ ही कुछ अनदेखी रोमांटिक तस्वीरें भी साझा की हैं। बॉलीवुड की देसी गर्ल प्रियंका चोपड़ा अब ग्लोबल आइकन बन चुकी हैं। साल 2018 में उन्होंने निक जोनस से शादी रचाई और सात समंदर पार जाकर बस गईं। हाल ही में प्रियंका चोपड़ा ने निक जोनस के साथ डेटिंग के दिनों की यादें ताजा की हैं।

कब शुरू हुआ था निक–प्रियंका की बातचीत का सिलसिला?

प्रियंका चोपड़ा और निक जोनस ने साल 2018 में शादी रचाई थी। कपल के एक बिटिया मालती है। निक और प्रियंका चोपड़ा की बातचीत का सफर नौ साल पहले यानी साल 2017 में शुरू हुआ था। प्रियंका चोपड़ा ने निक को अपना नंबर दिया था।

प्रियंका चोपड़ा ने क्या कहा?

प्रियंका चोपड़ा ने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट शेयर किया है। इसमें उन्होंने निक जोनस के साथ अपने शुरुआती रिश्ते के कुछ ऐसे पल शेयर किए हैं, जो पहले कभी नहीं देखे गए। इसी के साथ उन्होंने याद किया कि कैसे उन्होंने साल 2017 की गर्मियों में निक को अपना नंबर दिया था। इस पोस्ट में उन्होंने इस याद को जोनस ब्रदर्स के नए गाने लिसन व्हेन सैड से जोड़ा। प्रियंका चोपड़ा ने कैप्शन लिखा है, ओह हां! मुझे याद है कि मैंने गर्मियों में तुम्हें अपना नंबर दिया था। साल 2017 की गर्मियों में। इसी के साथ जानकारी दी है कि जोनस ब्रदर्स का नया गाना लिसन व्हेन सैड रिलीज हो गया है।



समय रैना–क्या 12वीं फेल अभिनेत्री को डेट कर रहे समय रैना





एंटरटेनमेंट डेस्क। समय रैना एक अभिनेत्री के साथ नजर आए हैं। दोनों के रिश्ते को लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं। समय रैना इस बार अपने शो की वजह से नहीं, बल्कि अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में वह मेधा शंकर के साथ एक ट्रिप पर साथ देखे गए। उनकी ऑफ–स्क्रीन केमिस्ट्री फैंस का ध्यान खींच रही है। यह पहली बार नहीं है जब कॉमेडियन और 12वीं फेल की अभिनेत्री के बारे में चर्चा हो रही है। जुलाई 2026 में, लोगों ने देखा था कि वे साथ में इवेंट्स में शामिल हो रहे थे, जिससे उनके रिश्ते को लेकर अटकलें और तेज हो गईं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उन्हें हाल ही में एक फ्लाइट में साथ देखा गया।

समय को लेकर क्या हैं अटकलें?

फिल्मफेयर के अनुसार एक प्रत्यक्षदर्शी ने दावा किया कि समय और मेधा को एक ही फ्लाइट में यात्रा करते देखा गया। दोनों एक–दूसरे के साथ सहज लग रहे थे और उनके बीच नजदीकी देखी गई। इससे यह अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या उनका रिश्ता दोस्ती से बढ़कर कुछ है।

फिर क्यों चर्चा में आया कपल?

फैंस ने बार–बार उनके बीच सहज तालमेल और बातचीत देखी है। दर्शकों ने उनके बीच के सहजपन को महसूस किया है। हालांकि उनकी हालिया बातचीत से रोमांटिक रिश्ते का कोई संकेत नहीं मिला। मगर एयरपोर्ट पर साथ दिखने से वे फिर से चर्चा में आ गए हैं।

फैंस दे रहे प्रतिक्रियाएं

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वे शायद अपने निजी रिश्ते को लोगों की नजरों से दूर रखना चाहते हैं। हालांकि साथ दिखने की वजह से वह चर्चा में बने हुए हैं। फैंस व नेटिजन्स सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं।

लंदन स्क्वैश क्लासिक–क्वार्टर फाइनल में हारकर बाहर हुईं अनाहत सिंह

स्पोर्ट्स डेस्क। शिवसांगरी ने भारतीय युवा खिलाड़ी पर अपनी आसान जीत का क्रेडिट अपने टैक्टिकल अप्रोच और इंटेंसिटी बनाए रखने की क्षमता को दिया। भारत की अनाहत सिंह का लंदन स्क्वैश क्लासिक में सफर शुक्रवार को क्वार्टर फाइनल में हार के साथ समाप्त हो गया। मलयेशिया की तीसरी सीड शिवसांगरी सुब्रमण्यम ने अनाहत को हराया। मौजूदा वर्ल्ड जूनियर चौंपियन अनाहत मुकाबले की शुरुआत से ही खुद को मजबूत करने के लिए संघर्ष कर रही थीं। शिवसांगरी ने रैलियों को नियंत्रित किया और लगातार अनाहत को कोर्ट के पीछे धकेलते हुए सिर्फ 17 मिनट में 11–4, 11–4 से जीत हासिल की।

इस नतीजे के साथ यूएसडी 144,000 पीएसए गोल्ड इवेंट में अनाहत का सफर खत्म हो गया। भारतीय खिलाड़ी ने आठवीं सीड वाली बेल्जियम की नेले गिलिस को तीन गेम के कड़े मुकाबले में हराकर आखिरी आठ में जगह बनाई थी। लंदन स्क्वैश क्लासिक की पूर्व चौंपियन शिवसांगरी अब सेमीफाइनल में दूसरी सीड वाली मिस्र की अमीना ओरफी से भिड़ेंगी। मौजूदा वर्ल्ड चौंपियन ओरफी, मलयेशियाई खिलाड़ी का इंतजार कर रही हैं।

शिवसांगरी ने भारतीय युवा खिलाड़ी पर अपनी आसान जीत का क्रेडिट अपने टैक्टिकल अप्रोच और इंटेंसिटी बनाए रखने की क्षमता को दिया। मलयेशियाई खिलाड़ी ने स्क्वैशटीवी से कहा, श्मैं अपने खेल से खुश हूं। अनाहत बहुत प्रतिभावान खिलाड़ी है। उसने कुछ टॉप खिलाड़ियों को हराया है और उनमें से ज्यादातर को चुनौती दी है।

अनाहत के लिए, यह हार एशियन गेम्स में उनके लिए आने वाली चुनौती का शुरुआती संकेत भी देती है। शिवसांगरी अभी एशिया की सबसे ऊंची रैंक वाली खिलाड़ी हैं और उम्मीद है कि जब जापान में कॉन्टिनेंटल कॉम्पिटिशन शुरू होगा तो वह भारत की मुख्य मुश्किलों में से एक होंगी। एशियन गेम्स में दांव खास तौर पर अहम होंगे, क्योंकि एकल गोल्ड मेडलिस्ट 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक्स के लिए क्वालिफिकेशन हासिल करेंगी, जहां स्क्वैश का लंबे समय से इंतजार किया जा रहा है। एशियन गेम्स पर अपना पूरा ध्यान लगाने से पहले अनाहत को एक और टूर्नामेंट खेलना है। वह 12 सितंबर से कतर क्लासिक में हिस्सा लेने वाली हैं।





एक कमरे में दो क्रिकेटरों को ठहराने के पक्ष में नहीं बीसीसीआई

एशियाई खेलों की शुरुआत होने में अब ज्यादा समय शेष नहीं रह गया है। बीसीसीआई क्रिकेटरों के लिए ठहराए जाने वाली व्यस्था से खुश नहीं है। बताया जा रहा है कि बोर्ड ने होटल के एक कमरे में दो क्रिकेटरों को ठहराए जाने पर आपत्ति जताई है। एशियाई खेलों के दौरान होटल के एक कमरे में दो क्रिकेटरों को ठहराए जाने की व्यवस्था से बीसीसीआई खुश नहीं है। बीसीसीआई ने भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) से गुहार लगाई है कि आयोजकों से बात कर एक क्रिकेटर को एक कमरे में ठहराने की व्यवस्था की जाए। आईओए ने इसे आयोजकों तक पहुंचा दिया है, लेकिन अब तक कोई जवाब नहीं मिला है। सूत्र बताते हैं कि सितारे भारतीय क्रिकेटरों के रहने में कोई दिक्कत नहीं आए, इसके लिए बीसीसीआई की एक टीम जल्द ऐची–नागोया का दौरा करेगी। इसके बाद ही बीसीसीआई फैसला लेगी कि क्रिकेटरों को आयोजकों की ओर से उपलब्ध कराए जा रहे होटल में ठहरना है या फिर उन्हें अपने खर्च पर होटल की व्यवस्था करनी है। बोर्ड ने यह भी फैसला लिया है कि एशियाड में भाग लेने के लिए हवाई यात्रा का खर्च वह खेल मंत्रालय से नहीं लेगा और अपने खर्च पर बिजनेस क्लास में क्रिकेटरों को जापान भेजेगा।

इकोनॉमी क्लास से जाते हैं खिलाड़ी

इस बार खेलों में श्रेयस अय्यर की कप्तानी में मुख्य टीम भेजी जा रही है, जिसमें बुमराह, अभिषेक शर्मा जैसे क्रिकेटर हैं। बीसीसीआई क्रिकेटरों को अमूमन बिजनेस क्लास में या फिर चार्टर्ड फ्लाइट में यात्रा कराता है। खेल मंत्रालय खेलों के लिए भारतीय दल का खर्च उठाते हुए खिलाड़ियों को इकोनॉमी क्लास में यात्रा कराता है। सूत्र बताते हैं कि बीसीसीआई ने आईओए से कहा है, वह क्रिकेटरों की यात्रा का खुद खर्च उठाएगा। आईओए ने 50 क्रिकेटरों और सपोर्ट स्टाफ पर दो करोड़ 34 लाख का खर्च तय किया था। इनमें यात्रा, दैनिक भत्ता, सेरिमोनियल–प्लेइंग किट का खर्च शामिल है।

महिला टीम को अलग होटल में ठहराया जाएगा

हरमनप्रीत कौर की अगुआई वाली महिला टीम को 14 सितंबर को नगोया पहुंचना है, जबकि उनकी वापसी 23 सितंबर की है। पुरुष टीम 21 को पहुंच रही है और चार अक्तूबर को वापसी कर रही है। पुरुष टीम को नगोया के एपीए होटल और महिला टीम को मेइतेत्सु ग्रांड होटल में ठहराया जा रहा है। आयोजकों ने एक कमरे में दो क्रिकेटरों को ठहराने की व्यवस्था की है। सूत्र बताते हैं कि आयोजकों ने कुछ दिन पूर्व एशियाड में आने वाले सभी देशों को बताया है कि उनकी ओर से 15 हजार खिलाड़ियों को ठहराने की व्यवस्था की गई थी, लेकिन यह 17 हजार पहुंच चुकी है। ऐसे में यह माना जा रहा है कि बीसीसीआई की मांग पूरी नहीं हो पाएगी।

सितारे भी रुकते हैं गेम्स विलेज में

एशियाड में इस बार गेम्स विलेज जैसो कोई व्यवस्था नहीं है। क्रूज शिप, कंटेनरों के अलावा होटलों में खिलाडियों को ठहराने की व्यवस्था की गई है। हालांकि, ओलंपिक जैसे आयोजनों में नोवाक जोकोविच, राफेल नडाल, मैजिक जान्सन जैसे अंतरराष्ट्रीय सितारे सबके साथ गेम्स विलेज में ठहरने को वरीयता देते आए हैं। अब यह देखना होगा कि बीसीसीआई आयोजकों की और से दिए गए होटल में क्रिकेटरों को उहराती है या अपनी ओर से इंतजाम करती है।

एशियन गेम्स–एथलीटों को साबित करनी होगी फिटनेस, एशियाड दल के खिलाड़ी 10 को दिल्ली में दिखाएंगे अपना प्रदर्शन

स्पोर्ट्स डेस्क। एशियाई खेलों के लिए चयनित भारत के 77 एथलीटों को जापान रवाना होने से पहले फिटनेस और प्रदर्शन साबित करना होगा। एएफआई 10 सितंबर को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में फाइनल सीरीज आयोजित करेगा। अविनाश साबले, ज्योति याराजी और अनु रानी समेत कई खिलाड़ियों पर विशेष निगाहें रहेंगी। एशियाई खेलों के लिए चयनित 77 एथलीटों को जापान जाने से पहले प्रदर्शन व फिटनेस साबित करनी होगा।

भारतीय एथलेटिक्स संघ (एएफआई) 10 सितंबर को दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में फाइनल सीरीज आयोजित कर रहा है। इसमें एशियाड दल के सभी एथलीटों को उतरना होगा। सूत्र बताते हैं कि इसमें बेहद खराब प्रदर्शन और खराब फिटनेस वाले एथलीटों को जापान नहीं भेजा जाएगा।

सबसे ज्यादा निगाहें पिछले एशियाड के स्वर्ण विजेता अविनाश साबले (3,000 मीटर स्टीपलचेज और रजत विजेता ज्योति याराजी (100 मीटर बाधा दौड़) पर रहेंगी। ये चयनित तो हुए हैं, लेकिन प्रदर्शन की जांच बाकी है। अविनाश–ज्योति चोट के पुनर्वास से गुजर रहे हैं। इस सीरीज में इनका प्रदर्शन एएफआई को बताएगा कि ये दोनों कहां खड़े हैं।

अनु पर रहेंगी निगाहें

पिछले एशियाड में स्वर्ण जीतीं जैवलिन थ्रोअर अनु रानी ने भी क्वालिफाइंग मार्क को नहीं छुआ है। उनका चीन की 18 वर्षीय यान जीयी से मुकाबला है जो जियामिन डायमंड लीग में 71.74 मीटर भाला फेंक चुकी हैं। सूत्र बताते हैं कि अविनाश साबले और अनु को सीरीज में एशियाड का क्वालिफाइंग मार्क छूने की ताकीद की गई है। राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता हाईजंपर सर्वेश कुषारे और ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवेल भी चोट से जूझ रहे हैं। माना जा रहा है कि ये दोनों को इस सीरीज में नहीं खेलेंगे, लेकिन दोनों एशियाड में खेलेंगे।

खिलाड़ियों के लिए बसाया मिनी जापान

छह फुट से थोड़े ज्यादा लंबे बिस्तर, बेहद करीब दीवारें और जरूरी चीजों की ही जगह। यह उस कमरे की झलक है, जो एशियाई खेलों में जापान जा रहे भारतीय एथलीटों के लिए भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) ने पटियाला के नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ स्पोर्ट्स और बंगलूरू साई सेंटर में तैयार कराए हैं।

साई के उपमहानिदेशक विनीत कुमार के मुताबिक, कंटेनरों में बने कमरे ठीक जापान जैसे हैं। खिलाड़ियों को एशियाड में खेल गांव नहीं होने की असुविधा से बचाने को साई उन्हें वहां के अनुकूल बना रहा है।

13 मीटर लंबे और तीन मीटर चौड़े कंटेनर में दोनों सिरों पर 2–2 लोगों के लिए बेडरूम हैं। दो एसी, वॉशिंग मशीन वाला छोटा लॉन्ड्री एरिया और रेफ्रिजरेटर व छोटी किचन है। 28 अगस्त से इनमें खिलाड़ियों को बारी–बारी से एक रात के लिए ठहराना शुरू किया गया है। साथ ही खास शेफ भी जापानी खाना खिलाड़ियों को दे रहे हैं।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

UPHIN/2023/90814

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

धोनी इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर नहीं खेलेंगे

स्पोर्ट्स डेस्क। महेंद्र सिंह धोनी के आईपीएल भविष्य को लेकर लगातार चर्चा होती रहती है। अब चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के पूर्व बल्लेबाज एस बद्रीनाथ ने माही के लोकर बड़ा दावा किया है। बद्रीनाथ ने खुलासा करते हुए बताया कि धोनी आईपीएल में इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर नहीं खेलेंगे।

पूर्व भारतीय कप्तान और चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के दिग्गज खिलाड़ी महेंद्र सिंह धोनी ने स्पष्ट कर दिया है कि वह आईपीएल में इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में नहीं खेलना चाहते हैं, जिससे 2027 में होने वाले टूर्नामेंट में उनकी भागीदारी को लेकर बनी अनिश्चितता में एक और नया मोड़ आ गया है। सीएसके के पूर्व बल्लेबाज सुब्रमण्यम बद्रीनाथ ने यह खुलासा किया।

धोनी के भविष्य पर फिर चर्चा शुरू

यह अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज इम्पैक्ट प्लेयर नियम से अपना कार्यभार कम करके आईपीएल में अपना करियर आगे बढ़ा सकते थे, लेकिन उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि अगर वह खेलना जारी रखते हैं तो वह पूर्णकालिक विकेटकीपर बने रहना चाहते हैं। धोनी के भविष्य को लेकर हमेशा ही अटकलों का बाजार गर्म रहता है। वह पिछले कुछ समय से चोट से जूझ रहे हैं। धोनी आईपीएल 2026 में एक भी मैच नहीं खेल सके थे और अब उनके अगले सीजन में खेलने को लेकर लगातार चर्चाएं हो रही हैं।



बद्रीनाथ ने अपने यू–ट्यूब चौनल पर कहा, धोनी ने मुझे खुद कहा था कि वह इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर नहीं खेलेंगे। वह खुद को पूर्णकालिक विकेटकीपर के तौर पर देख रहे हैं जिसका मतलब है कि उन्हें पूरे 20 ओवर मैदान पर रहना होगा। इसलिए यह तय है कि वह इम्पैक्ट के तौर पर नहीं उतरेंगे, लेकिन अगर धोनी ऐसा करते हैं तो रणनीतिक तौर पर सीएसके के लिए यह फायदेमंद रहेगा।

बद्रीनाथ ने कहा, धोनी के लिए लंबे समय तक खेलना मुश्किल होगा जैसा कि (सीएसके के पूर्व मुख्य कोच स्टीफन) फ्लेमिंग ने भी कहा है। वे 16वें ओवर के बाद ही बल्लेबाजी करेंगे और विकेटकीपिंग करेंगे। जब उनकी भागीदारी इतनी कम है तो इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में खेलना उनके लिए आदर्श स्थिति होगी।

बद्रीनाथ का मानना है कि इम्पैक्ट प्लेयर नियम धोनी पर काम का बोझ कम कर सकता है। इससे सीएसके उनके अनुभव और फिनिशर के रूप में उनकी भूमिका का फायदा उठा सकता है। विकेटकीपर के रूप में खेलना जारी रखने की धोनी की प्राथमिकता का मतलब है कि सीएसके को अगले साल आईपीएल में उनकी भागीदारी पर फैसला करने के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। सीएसके को पांच आईपीएल खिताब दिलाने वाले धोनी ने 2024 के सत्र से पहले कप्तानी छोड़ दी और तब से बल्लेबाज के रूप में भी उनकी भूमिका सीमित हो गई है।